HAFTAWAR MADANI MUZAKARA (HINDI)

ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से आठवां मदनी काम

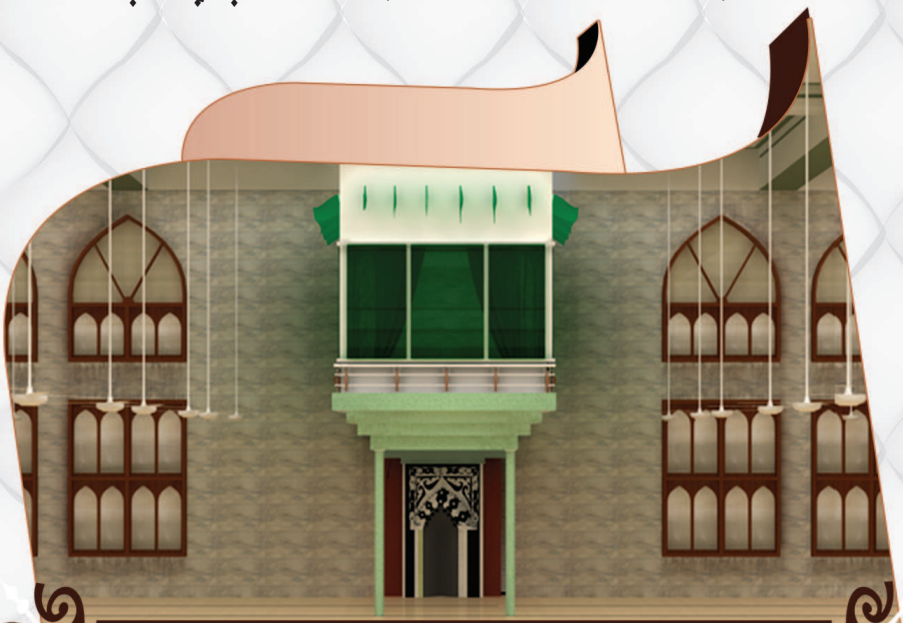

हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = یُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बीमार हो गए, बहुत इलाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी हालत में छे महीने गुज़र गए। एक दिन उसे पता चला कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के महल के पास से गुज़र रहे हैं तो उस ने उन्हें अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। जब आप तशरीफ़ लाए तो उसे देख कर इरशाद फ़रमाया : फ़िक्र न करो **अल्लाह** पाक की रेहमत से आज ही आराम आ जाएगा। फिर आप ने दुरूदे पाक पढ़ कर बादशाह के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तनदुरुस्त हो गया।[1]

हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد
तावीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तलबे इल्म के ख़्वाहां

हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की (इल्मे दीन पर मब्नी) एक ऐसी मजलिस देखी, जिस पर अगर सारे क़ुरैश फ़ख़्र करें तो येह वाक़ेई

[1] ..... راحت القلوب (فارسی)، ص ۵۰

www.dawateislami.net

उन के लिए क़ाबिले फ़ख़्र है । क्या देखता हूं कि इस क़दर लोग हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के घर के पास जम्अ़ हो गए कि रास्ता तंग पड़ गया और लोगों का ऐसा तांता बन्धा कि कोई शख़्स उन के दरमियान से गुज़र कर इधर उधर नहीं जा सकता था । चुनान्चे, मैं ने आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर लोगों के दरवाज़े पर जम्अ़ होने की इत्तिलाअ़ दी तो आप ने मुझे वुज़ू के लिए पानी लाने का हुक्म दिया और फिर वुज़ू के बाद आप ने मस्नद पर तशरीफ़ फ़रमा हो कर फ़रमाया : बाहर जा कर कहो कि जिसे **कुरआने मजीद** या इस के हुरूफ़ या इस से मुतअ़ल्लिक़ कुछ पूछना है, अन्दर आ जाए । फ़रमाते हैं : मैं ने जैसे ही लोगों को अन्दर आने की इजाज़त दी तो इतने लोग अन्दर दाख़िल हुवे कि सारा घर भर गया । फिर उन्हों ने जिस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ भी सुवाल किया, आप ने उन को जवाब इरशाद फ़रमाया बल्कि उन के सुवाल से कुछ ज़्यादा ही बयान किया, फिर फ़रमाया कि अपने दूसरे भाइयों का भी ख़याल करो तो वोह लोग बाहर चले गए ।

फिर आप ने कुरआने मजीद की **तफ़्सीर** या **तावील** के बारे में सुवाल पूछने वाले लोगों को अन्दर बुलाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया, जब उन्हें भी अन्दर आने की इजाज़त मिली तो उन से भी सारा घर भर गया । फिर उन्हों ने भी जो जो सुवालात किए आप ने उन के जवाबात दिए बल्कि मज़ीद कुछ इ़ल्मी बातें भी बताईं । फिर उन से भी इरशाद फ़रमाया : अपने दूसरे भाइयों का ख़याल करो । तो वोह बाहर चले गए ।

इस के बाद इरशाद फ़रमाया : अब जा कर उन लोगों को बुला लाओ जिन्हों ने **ह़लालो ह़राम** और **फ़िक़्ह** के बारे में पूछना है । वोह आए तो उन से भी मुकम्मल घर भर गया । उन्हों ने भी जो जो पूछा आप ने उस से ज़्यादा ही जवाब दिया, फिर उन से भी जब येह इरशाद फ़रमाया कि अपने दूसरे भाइयों का ख़याल करो तो वोह भी बाहर चले गए ।

www.dawateislami.net

फिर **फ़राइज़** और इन जैसे **दीगर मसाइल** पूछने वाले लोगों को बुलाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया तो येह लोग भी इस क़दर थे कि उन से पूरा घर भर गया। उन्हों ने भी जो सुवालात किए आप ने उन के तसल्ली बख़्श जवाबात दिए और फिर फ़रमाया : अपने दूसरे भाइयों का ख़याल करो तो वोह लोग बाहर चले गए। फिर अ़रबी ज़बान, अश्आ़र और नादिर कलाम के बारे में सुवाल करने वालों को बुलाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया तो उन की आमद से भी घर भर गया। उन्हों ने भी जो सुवाल किया आप ने उन के हर सुवाल का काफ़ी व शाफ़ी जवाब दिया।[1]

इल्म सीखने का जज़्बा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने दौरे सह़ाबा व ताबेईन में इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का जज़्बा (Passion) कैसा था कि दीने इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ हर वोह बात जिसे वोह नहीं जानते थे जानने वालों से पूछ कर अपने दीनी जज़्बे और इ़ल्म की प्यास बुझाने का सामान करते थे, मगर अफ़्सोस ! आज हमारी अक्सरिय्यत (Majority) इ़ल्मे दीन से दूर नज़र आती है अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ जो मसाइल सीखना फ़र्ज़ हैं हम उन से भी बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं। दीनी मदारिस में जा कर इ़ल्मे दीन सीखना तो दूर, दीनी कुतुब के मुत़ालए़ का शौक़ भी ख़त्म होता जा रहा है। इ़ल्मे दीन सीखने का एक आसान ज़रीआ़ किसी साहिबे इ़ल्म शख़्सिय्यत से पूछ लेना भी है मगर इस की त़रफ़ भी हमारी बे तवज्जोही सब पर अ़यां (ज़ाहिर) है, ह़ालांकि **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है :

[1] ..... حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المھاجرین، ۴۵-عبداللہ بن عباس، ۱/۳۹۵، رقم: ۱۱۲۹

www.dawateislami.net

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝ (پ۱۷، الانبیآء: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म न हो।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में इस आयते मुबारका के तह़्त बयान किया गया है कि इस आयत में न जानने वाले को जानने वाले से पूछने का हुक्म दिया गया क्यूंकि ना वाक़िफ़ (ना जानने वाले) के लिए इस के इ़लावा और कोई चारा ही नहीं कि वोह वाक़िफ़ (जानने वाले) से दरयाफ़्त करे और जहालत (Illiteracy) के मरज़ का इ़लाज (Treatment) भी येही है कि आ़लिम से सुवाल करे और उस के हुक्म पर अ़मल करे और जो अपने इस मरज़ का इ़लाज नहीं करता वोह दुन्याओ आख़िरत में बहुत नुक़्सान उठाता है।[1]

इ़ल्म न सीखने के नुक़्सानात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन से दूरी सरासर नुक़्सान और नाकामी का सबब है, मुख़्तसर तौ़र पर चन्द एक नुक़्सानात (Losses) मुलाह़ज़ा हों :

❄ ईमान एक ऐसी अहम तरीन चीज़ है जिस पर बन्दे की उख़रवी नजात का दारो मदार है और ईमान सह़ीह़ होने के लिए अ़क़ाइद (Beliefs) का दुरुस्त होना ज़रूरी है, लेहाज़ा सह़ीह़ इस्लामी अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ मालूमात (Information) होना लाज़िमी है। अब जिसे उन अ़क़ाइद की मालूमात नहीं जिन पर बन्दे का ईमान दुरुस्त होने का मदार है तो वोह अपने गुमान में येह समझ रहा होगा कि मेरा ईमान सह़ीह़ है लेकिन ह़क़ीक़त इस के बर अ़क्स भी हो सकती है और अगर ह़क़ीक़त बर अ़क्स हुई और ह़ालते कुफ़्र में मर गया तो

1....सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन, पारह 17, अल अम्बिया, तह़्तुल आयत : 7, 6 / 287 ब तग़्य्युर।

www.dawateislami.net

आख़िरत में हमेशा के लिए जहन्नम (Hell) में रेहना पड़ेगा और इस के इन्तिहाई दर्दनाक (Painful) अ़ज़ाबात सेहने होंगे।

❄ फ़र्ज़ व वाजिब और दीगर इबादात को शरई त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अदा करना ज़रूरी है, इस लिए इस की मालूमात होना भी ज़रूरी है। अब जिसे इबादात के शरई त़रीक़े और इस से मुतअ़ल्लिक़ दीगर ज़रूरी चीज़ों की मालूमात नहीं होतीं और न वोह किसी आ़लिम से मालूमात ह़ासिल करता है तो मशक़्क़त उठाने के सिवा उसे कुछ ह़ासिल नहीं होता। जैसे नमाज़ के दुरुस्त और क़ाबिले क़बूल होने के लिए **त़हारत** एक बुन्यादी शर्त़ है और जिस की त़हारत दुरुस्त न हो तो वोह अगर्चे बरसों तक नमाज़े तहज्जुद पढ़ता रहे, पाबन्दी के साथ पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करता रहे और सारी सारी रात नवाफ़िल पढ़ने में मसरूफ़ रहे, उस की येह तमाम इबादात राएगां (बेकार) जाएंगी और वोह इन के सवाब से मेह़रूम रहेगा।

❄ सिर्फ़ इबादात ही नहीं बल्कि कारोबारी (Business), मुआ़शरती (Community) और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी (Married Life) के बहुत से मुआ़मलात ऐसे हैं जिन के लिए शरीअ़त ने कुछ उसूल और क़वानीन मुक़र्रर किए हैं और इन्ही उसूलों पर इन मुआ़मलात के ह़लाल या ह़राम होने की बुन्याद है और जिसे इन उसूलों क़वानीन की मालूमात न हों और न ही वोह किसी से इन के बारे में मालूमात ह़ासिल करे तो ह़लाल के बजाए ह़राम में मुब्तला होने का इम्कान (Chance) ज़्यादा है और ह़राम में मुब्तला होना ख़ुद को **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब का ह़क़दार ठेहराना है।

www.dawateislami.net

सरे दस्त (फ़िल वक़्त) येह तीन बुन्यादी और बड़े नुक़्सानात (Losses) ज़िक्र किए गए हैं वरना शरई मालूमात न लेने के नुक़्सानात की एक त़वील फ़ेहरिस्त है, जिसे यहां ज़िक्र करना मुमकिन नहीं। दुआ है कि **अल्लाह** पाक हर मुसलमान को अ़क़ाइद, इबादात, मुआ़मलात और ज़िन्दगी के हर शोबे में शरई मालूमात ह़ासिल करने और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। [1] آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्म कहां से सीखा जाए?

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : اَلْبَرَکَۃُ مَعَ اَکَابِرِکُمْ यानी बरकत तुम्हारे बड़ों के साथ है।[2] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि इस ह़दीसे पाक में मुख़्तलिफ़ उमूर व ह़ाजात में तजरिबाकार होने की बिना पर बड़ों से रुजूअ़ कर के बरकत ह़ासिल करने की तरग़ीब दिलाई गई है। बड़ों से कौन ह़ज़रात मुराद हैं, मज़ीद वज़ाह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि बड़ों से मुराद या तो उ़म्र रसीदा ह़ज़रात हैं ताकि उन के पास बैठ कर उन की ज़िन्दगी भर के तजरिबात से फ़ाएदा उठाया जा सके या फिर उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہ मुराद हैं ख़्वाह वोह कम उ़म्र ही हों क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने उन्हें इ़ल्म की अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई है, लेहाज़ा उन की इ़ज़्ज़त करना भी

[1] ....सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरिल कुरआन, पारह 17, अल अम्बिया, तह़तुल आयत : 7, 6 / 287

[2] ..... مکارم الاخلاق للخرائطی، باب اکرام الشیوخ وتوقیرھم، ۲/ ۲۱۴، حدیث: ۳۸۳

www.dawateislami.net

सब पर लाज़िम है ।[1] क्यूंकि जो शख़्स बुज़ुर्गों की सोह़बत ब त़रीक़े इ़ज़्ज़त नहीं करता उस पर उन के फ़ाएदे और बरकतें ह़राम हो जाती हैं, उन के नूर का कुछ ह़िस्सा भी उस पर ज़ाहिर नहीं होता ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन ज़ुरनूजी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इ़ल्म तो वोही है जो एह्ले इ़ल्म (यानी अकाबिर उ़लमाए किराम) की ज़बानों से सुन कर ह़ासिल किया गया हो क्यूंकि वोह इ़ल्म उन की ज़िन्दगी का निचोड़ होता है, वोह इस त़रह़ कि वोह जो कुछ सुनते हैं, उस में से अह़सन और उ़म्दा मेह़फ़ूज़ कर लेते हैं, लेहाज़ा उन के मुंह से निकले हुवे इरशादात सब के सब उ़म्दा और बेहतर बातों पर ही मुश्तमिल होते हैं ।[3]

बुज़ुर्गों की सोह़बत व मल्फ़ूज़ात का फ़ैज़ान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिए कि बुज़ुर्गों की सोह़बत व ज़ियारत के ज़रीए अपने मदनी कामों को बरकतों से हम किनार रखें । क्यूंकि इन्सान की शख़्सिय्यत और उस के अख़्लाक़ व किरदार पर सोह़बत का गेहरा असर पड़ता है । लेहाज़ा **अल्लाह वालों की सोह़बत से अच्छे अख़्लाक़, ईमान की पुख़्तगी और मारिफ़ते इलाही जैसी आला सिफ़ात ह़ासिल होतीं और बुरे अख़्लाक़ से नजात मिलती है ।** जैसा कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुलन्द मक़ामो मर्तबा सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत के सबब मिला, फिर ताबेईने उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم ने येह शरफ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बते बा बरकत से पाया और यूं येह सिलसिला

[1] ..... فیض القدیر، حرف الباء، فصل فی المحلی بأل من هذا الحرف، ۳/ ۲۸۷، تحت الحدیث: ۳۲۰۵

[2] ..... نفحات الانس، ۲۴۸-ابو علی الثقفی، ص ۲۲۶

[3] ..... تعلیم المتعلم طریق التعلم، فصل فی الاستفادة واقتباس العلم، ص ۷۳

www.dawateislami.net

हर दौर में जारी रहा कि जो भी नूरे मुस्तफ़ा से फ़ैज़ पाने वालों की सोहबत इख़्तियार करता उस का सीना भी मदीना बन जाता।[1] चुनान्चे, येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم ने हमेशा मशाइख़ के मल्फ़ूज़ात यानी उन की बातों और नसीहतों के मदनी फूलों को इन्तिहाई तवज्जोह से सुनने की तल्क़ीन फ़रमाई । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैख़ की ख़िदमत में हाज़िरी के वक़्त मुरीद की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स समुन्दर के किनारे बैठा हुवा रिज़्क़ का मुन्तज़िर हो । यानी वोह शैख़ की आवाज़ पर कान लगाए रखे और कलामे शैख़ के ज़रीए अपने रूहानी रिज़्क़ का इन्तिज़ार करता रहे, इस तरह उस की अक़ीदत और तलबे हक़ का मक़ाम मज़बूत होता है और वोह **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल का मुस्तहिक़ ठेहरता है।[2] बल्कि अगर मशाइख़ की बातें समझ में न आएं तो भी उन की ख़िदमत में हाज़िर होना तर्क न करें कि बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह वालों की ख़िदमत में हाज़िर रहें और उन के साथ उठने बैठने वालों से भी फ़ैज़ हासिल करते रहें, ख़्वाह कभी इस मुआमले में आप को तानो तश्नीअ का सामना ही करना पड़े । इस लिए कि (कल बरोज़े क़ियामत) जब येह पूछा जाए कि आप कौन हैं ? तो केह सकें कि मैं तो अल्लाह वालों के साथ उठने बैठने वाला और उन का दोस्त हूं । नीज़ अगर कभी आप को उन की बातें समझ में न आएं तो वोह जो भी इरशाद फ़रमाएं बस सर झुका दें, ताकि कल बरोज़े क़ियामत येह केह सकें कि मैं तो अल्लाह वालों की बातें सुन कर गर्दन झुकाने वाला था । अगर्चे आप हक़ीक़ी मुजरिम

[1] ..... حقائق عن التصوف، ص ۴۱ ملخصًا

[2] ..... عوارف المعارف ملحق احياء العلوم، الباب الحادی والخمسون فی آداب المرید مع الشیخ، ۵/۲۶۳

www.dawateislami.net

ही होंगे तो इस सबब से उम्मीद है कि आप की नजात का सामान हो ही जाएगा ।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मशाइख़े किराम के मल्फ़ूज़ात शरीफ़ की येही वोह बरकतें हैं जिन की वज्ह से बाज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने दीगर लोगों तक फ़ैज़ पहुंचाने की निय्यत से उन्हें लिखने की न सिर्फ़ इजाज़त अ़ता फ़रमाई बल्कि तरग़ीब भी दिलाई । जैसा कि सुल्तानुल मशाइख़, ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह मुरीद कितना सआ़दत मन्द है जो अपने पीर के इरशादात लिख लिया करे और इस ग़रज़ से हर दम अपने पीर की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे ।[2]

ह़ज़रत ख़्वाजा मीर ह़सन सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से उन के मल्फ़ूज़ात लिखने की इजाज़त त़लब की तो आप ने न सिर्फ़ इजाज़त दी बल्कि बत़ौरे तरग़ीब इरशाद फ़रमाया : जब मैं शैख़ुल इस्लाम फ़रीदुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुरीद हुवा तो मैं ने दिल में ठान ली कि जो कुछ आप की ज़बाने मुबारक से सुनूंगा लिखता जाऊंगा । चुनान्चे, मल्फ़ूज़ात लिखने का सिलसिला जारी रहा और इस की इत्तिलाअ़ मैं ने अपने पीरो मुर्शिद को भी कर दी, जिस पर आप की शफ़्क़त इस त़रह़ सामने आई कि जब कभी कोई ह़िकायत वग़ैरा बयान फ़रमाते तो मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछ लेते । अगर मैं मौजूद न होता तो ह़ाज़िर होने पर बयान कर्दा फ़वाइद मेरे सामने दोबारा बयान फ़रमा देते (ताकि मैं लिख लूं) ।[3]

[1] ..... نفحات الانس، ۳۶۰-ابو علی الشبوی المروزی، ص ۳۳۲

[2] ..... راحت القلوب فارسی، ص ۲

[3] ..... فوائد الفؤاد فارسی، ص ۳۰

www.dawateislami.net

फ़ी ज़माना क्या करें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस्लाहे नफ़्स, तेहज़ीबे अख़्लाक़ और अ़क़ीदे व ईमान की पुख़्तगी ऐसे अवसाफ़ चूंकि सिर्फ़ मुत़ालआ़ करने और ज़ख़ीम किताबें पढ़ने से नहीं, बल्कि किसी की पैरवी करने और उस की हम नशीनी व सोहबत इख़्तियार करने से ह़ासिल होते हैं। लेहाज़ा फ़ी ज़माना किसी ऐसी हस्ती की हम नशीनी इख़्तियार करना अज़ ह़द ज़रूरी है कि जिस में अस्लाफ़ की झलक दिखाई देती हो। इस पुर फ़ितन दौर में जबकि हर त़रफ़ जहालत (Illiteracy) का दौर दौरा है, एक तादाद है जो दिन रात मालो ज़र कमाने में मसरूफ़ है, बस माल आना चाहिए, इस पर येही धुन सुवार है। नमाज़ पढ़ते बरसों गुज़र गए मगर दुरुस्त त़रीक़ए नमाज़ तो एक त़रफ़ रोज़ मर्रा के बुन्यादी मसाइल से भी आगाह नहीं, ह़ालांकि ना वाक़िफ़ के लिए इस के इ़लावा और कोई चारा नहीं कि वोह वाक़िफ़ से दरयाफ़्त करे कि जहालत के मरज़ का इ़लाज (Treatment) भी येही है कि आ़लिम से सुवाल करे और उस के बताए हुवे हुक्मे शरई पर अ़मल करे।

याद रखिए ! आ़लिम की सोहबत में ह़ाज़िर होने में कम अज़ कम सात फ़ाएदे हैं, ख़्वाह इ़ल्म ह़ासिल करे या न करे :

(1) वोह शख़्स त़ालिबे इ़ल्मों में शुमार किया जाता है और उन का सा सवाब पाता है।

(2) जब तक उस मजलिस में बैठा रहेगा गुनाहों से बचा रहेगा।

(3) जिस वक़्त येह अपने घर से त़लबे इ़ल्म की निय्यत से निकलता है हर क़दम पर नेकी पाता है।

(4) इ़ल्म के ह़ल्क़े में रेह़मते इलाही नाज़िल होती है जिस में येह भी शरीक हो जाता है।

www.dawateislami.net

(5) येह इल्म का ज़िक्र सुनता है जो कि इबादत है।

(6) वहां जब कोई मुश्किल मस्अला सुनता है जो उस की समझ में नहीं आता और उस का दिल परेशान होता है तो ह़क़ पाक के नज़्दीक मुन्कसिरुल क़ुलूब (यानी आ़जिज़ो बेबस लोगों) में शुमार किया जाता है।

(7) इस के दिल में इल्म की इ़ज़्ज़त और जहालत से नफ़रत पैदा होती है।[1]

صُحبَتِ صَالِح تُرا صَالِح کُنَد | صُحبَتِ طَالِح تُرا طَالِح کُنَد

यानी अच्छों की सोह़बत अच्छा और बुरों की सोह़बत बुरा बना देती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ी ज़माना शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वोह यादगारे सलफ़ शख़्सिय्यत हैं जिन के मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात और इल्मो ह़िक्मत से मामूर **मदनी मुज़ाकरों** ने लाखों मुसलमानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप की **इल्मी शख़्सिय्यत** से फ़ाएदा उठाते हुवे कसीर ज़िम्मेदार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और मुख़्तलिफ़ शोबाहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल हफ़्तावार होने वाले **मदनी मुज़ाकरों** में मुतफ़र्रिक़ (Different) मौज़ूआ़त पर सुवालात (Questions) पूछते हैं और आप उन्हें ह़िक्मत आमोज़ इ़श्क़े रसूल में डूबे हुवे जवाबात (Answers) से नवाज़ते और ह़स्बे आ़दत वक़्तन फ़ वक़्तन صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! की दिल नवाज़ सदा लगा कर दुरूदे पाक पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करने का मौक़अ़ भी अ़त़ा फ़रमाते हैं।

[1] ..... تفسیر کبیر، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۱، ۱/ ۴۰۳

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी मुज़ाकरों से अ़क़ाइदो आमाल और ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह़, महब्बते इलाही व इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ न सिर्फ़ शरई, तिब्बी, तारीख़ी और तन्ज़ीमी मालूमात का ला जवाब ख़ज़ाना हाथ आता है बल्कि मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होता है।** लेहाज़ा इस की अहम्मिय्यत व अफ़ादिय्यत के पेशे नज़र हर हफ़्ते को बाद नमाज़े इ़शा होने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में इजतिमाई तौ़र पर ख़ुद भी शिर्कत कीजिए और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाइए ताकि हमारे साथ साथ उन को भी दुन्याओ आख़िरत की भलाइयां नसीब हों।

मदनी मुज़ाकरा है शरीअ़त का ख़ज़ीना अख़्लाक़ का तेहज़ीब का त़रीक़त का ख़ज़ीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी मुज़ाकरा और फ़रोग़े इल्म

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तेह़रीक दावते इस्लामी इल्मी फ़ुक़्दान को ख़त्म करने के लिए हर दम कोशां है। **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से फ़रोग़े इल्मे दीन के लिए अब तक कई शोबाजात और मदनी कामों का क़ियाम अ़मल में लाया जा चुका है, इसी सिलसिले की एक कड़ी **मदनी मुज़ाकरा** भी है जो 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम भी है। **मदनी मुज़ाकरे** में चूंकि शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर पूछे गए सुवालात (Questions) के जवाबात (Answers) अ़त़ा फ़रमाते हैं और येह सवाब का काम है, जैसा कि दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 660 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त**, जिल्द 3, ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 629 पर है :

www.dawateislami.net

घड़ी भर इल्मे दीन के मसाइल में मुज़ाकरा और गुफ़्तगू करना सारी रात इबादत करने से अफ़्ज़ल है।[1]

मदनी मुज़ाकरे में सुवाल पूछने की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जैसा कि बयान हुवा कि **मदनी मुज़ाकरे** में मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर सुवाल जवाब का सिलसिला होता है। लेहाज़ा **याद रखिए** कि इल्मे दीन के हुसूल में सुवाल की बड़ी अहम्मिय्यत है, इस के ज़रीए जहालत से नजात मिलती है। चुनान्चे, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : شِفَاءُ الْعِيِّ السُّؤَالُ यानी बे इल्मी का इलाज सुवाल है।[2]

इल्म की कुन्जी

इसी त़रह़ सुवाल को इल्म की कुन्जी (Key) भी क़रार दिया गया है। जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है : इल्म ख़ज़ाना है और सुवाल उस की कुन्जी है, **अल्लाह** पाक तुम पर रेह़्म फ़रमाए सुवाल किया करो क्यूंकि इस (यानी सुवाल करने की सूरत) में चार अफ़राद को सवाब दिया जाता है। सुवाल करने वाले को, जवाब देने वाले को, सुनने वाले और उन से मह़ब्बत करने वाले को।[3]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कितने ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जो **मदनी मुज़ाकरों** में शरीक हो कर सुवालात करते और शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह़्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़िक्मत आमोज़ और इश्क़े रसूल में डूबे हुवे

[1] ..... المدخل الی السنن الکبری، باب فضل العلم...الخ، ص ۳۰۵، رقم: ۴۵۹

[2] ..... ابو داود، کتاب الطهارة، باب فی المجروح یتیمم، ص ۶۹، حدیث: ۳۳۶

[3] ..... مسند فردوس، باب العین، ذکر الفصول من ذوات الف واللام، ۳/۶۸، حدیث: ۴۱۹۲

www.dawateislami.net

जवाबात समाअ़त कर के ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ क़रार पाते हैं।

इल्म में तरक़्क़ी का बाइ़स

फ़क़ीहे उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : इल्म में ज़ियादती तलाश से और वाक़िफ़िय्यत सुवाल से होती है तो जिस (चीज़) का तुम्हें इल्म नहीं उस के बारे में जानो और जो कुछ जानते हो, उस पर अ़मल करो।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्मई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने अ़र्ज़ की : आप ने इतना इल्म किस त़रह़ ह़ासिल किया ? फ़रमाया : सुवालात की कसरत और अहम बातों को अच्छी त़रह़ याद रखने की वज्ह से।[2]

पूछने से न शर्माइए !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा इल्म सीखने के लिए सुवाल पूछने से शर्माना नहीं चाहिए कि लोग क्या सोचेंगे कि इस को येह बात भी मालूम नहीं या इस की इतनी उ़म्र हो गई अभी तक इस को येह मस्अला नहीं पता ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे : मैं बहुत कुछ जानता हूं, लेकिन जिन बातों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करने से मैं (बचपन या जवानी में) शर्माया था उन से इस बुढ़ापे में भी बे ख़बर हूं।[3]

[1] ..... جامع بیان العلم وفضلہ، باب الحمد السوال...الخ، ص ۳۷۴، رقم: ۵۲۳

[2] ..... المرجع السابق، ص ۳۸۲، رقم: ۵۴۵

[3] ..... المرجع السابق، ص ۳۸۲، رقم: ۵۴۶

www.dawateislami.net

सहाबा व सहाबियात का त़रीक़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दीन सीखने के लिए सुवालात करना सह़ाबए किराम और सह़ाबियाते त़य्यिबात का मुबारक त़र्ज़े अ़मल रहा है। येह मुक़द्दस हस्तियां ख़ुद बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर या किसी के ज़रीए़ से अपना सुवाल पहुंचा कर अपनी इ़ल्मी प्यास बुझाने का सामान फ़रमाया करतीं। उन्हों ने दीनी मसाइल सीखने में कभी शर्म व झिझक को आड़े न आने दिया, जैसा कि अन्सारी सह़ाबियाते त़य्यिबात की तारीफ़ में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : अन्सारी ख़वातीन कितनी अच्छी हैं कि दीनी मसाइल सीखने में ह़या नहीं करतीं।[1] येही वज्ह है कि कई एह़कामे शरइ़य्या की सराह़त व वज़ाह़त इन्ही ह़ज़रात के सुवालात करने की बदौलत उम्मते मुस्लिमा को नसीब हुई, आइए ! चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा करते हैं :

बिला वासित़ा सुवालात करना

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ त़लबे इ़ल्म के लिए मिस्र गए, वहां पर उन्हों ने ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से ह़दीसे ख़ालिद बिन वलीद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सुनाने की दरख़्वास्त की तो उन्हों ने एक साल के रोज़े रखने का हुक्म फ़रमाया। उन के इस हुक्म पर अ़मल के बाद ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दोबारा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ामिद मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी सनद से येह ह़दीसे पाक सुनाई कि

[1] ..... مسلم، کتاب الحیض، باب استحباب استعمال...الخ، ص۱۳۶، حدیث:۶۱-(۳۳۲)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक आराबी (यानी अ़रब शरीफ़ के देहाती) ने बारगाहे रिसालत मआब में ह़ाज़िरी दी और अ़र्ज़ की : दुन्याओ आख़िरत के बारे में कुछ पूछना चाहता हूं। तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पूछो ! जो पूछना चाहते हो।

❄ **अ़र्ज़ की :** मैं सब से बड़ा आ़लिम बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** **अल्लाह** से डरो, सब से बड़े आ़लिम बन जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं सब से ज़्यादा ग़नी बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** क़नाअ़त इख़्तियार करो, ग़नी हो जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं लोगों में सब से बेहतर बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** लोगों में सब से बेहतर वोह है जो दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाता हो, तुम लोगों के लिए नफ़्अ़ बख़्श बन जाओ। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं चाहता हूं कि सब से ज़्यादा अ़द्ल करने वाला बन जाऊं। **इरशाद फ़रमाया :** जो अपने लिए पसन्द करते हो वोही दूसरों के लिए भी पसन्द करो, सब से ज़्यादा आ़दिल बन जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं बारगाहे इलाही में ख़ास मक़ाम ह़ासिल करना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** ज़िक्रुल्लाह की कसरत करो, **अल्लाह** पाक के ख़ास बन्दे बन जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** अच्छा और नेक बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** **अल्लाह** पाक की इ़बादत यूं करो गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो येह ख़याल रखो कि वोह तुम्हें देख रहा है। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं कामिल ईमान वाला बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो, कामिल ईमान वाले बन जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** (**अल्लाह** पाक का) फ़रमां बरदार बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** **अल्लाह** पाक के फ़राइज़ का एहतिमाम करो, उस के मुत़ीअ़ (व फरमां बरदार) बन जाओगे।

www.dawateislami.net

❄ **अ़र्ज़ की :** (रोज़े क़ियामत) गुनाहों से पाक हो कर **अल्लाह** पाक से मिलना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** ग़ुस्ले जनाबत ख़ूब अच्छी त़रह़ किया करो, **अल्लाह** पाक से इस ह़ाल में मिलोगे कि तुम पर कोई गुनाह न होगा। **अ़र्ज़ की :** मैं चाहता हूं कि रोज़े क़ियामत मेरा ह़श्र नूर में हो। **इरशाद फ़रमाया :** किसी पर ज़ुल्म मत करो, तुम्हारा ह़श्र नूर में होगा। ❄ **अ़र्ज़ की :** मैं चाहता हूं कि **अल्लाह** पाक मुझ पर रेह़्म फ़रमाए। **इरशाद फ़रमाया :** अपनी जान पर और मख़्लूक़े ख़ुदा पर रेह़्म करो, **अल्लाह** पाक तुम पर रेह़्म फ़रमाएगा। ❄ **अ़र्ज़ की :** गुनाहों में कमी चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** इस्तिग़्फ़ार करो, गुनाहों में कमी होगी। ❄ **अ़र्ज़ की :** ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाला बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** लोगों के सामने **अल्लाह** पाक के बारे में शिक्वा व शिकायत मत करो, सब से ज़्यादा इ़ज़्ज़तदार बन जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** रिज़्क़ में कुशादगी चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** हमेशा बा वुज़ू रहो, तुम्हारे रिज़्क़ में फ़राख़ी आएगी। ❄ **अ़र्ज़ की : अल्लाह** व रसूल का मेह़बूब बनना चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया : अल्लाह** व रसूल की मेह़बूब चीज़ों को मेह़बूब और ना पसन्द चीज़ों को ना पसन्द रखो। ❄ **अ़र्ज़ की : अल्लाह** पाक की नाराज़ी से अमान का त़लबगार हूं। **इरशाद फ़रमाया :** किसी पर ग़ुस्सा मत करो, **अल्लाह** पाक की नाराज़ी से अमान पा जाओगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** दुआ़ओं की क़बूलिय्यत चाहता हूं। **इरशाद फ़रमाया :** ह़राम से बचो, तुम्हारी दुआ़एं क़बूल होंगी। ❄ **अ़र्ज़ की :** चाहता हूं कि **अल्लाह** पाक मुझे लोगों के सामने रुस्वा न फ़रमाए। **इरशाद फ़रमाया :** अपनी शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करो, लोगों के सामने रुस्वा नहीं होगे। ❄ **अ़र्ज़ की :** चाहता हूं कि **अल्लाह** पाक मेरी पर्दापोशी फ़रमाए। **इरशाद फ़रमाया :** अपने मुसलमान भाइयों के ऐ़ब छुपाओ, **अल्लाह** पाक तुम्हारी पर्दापोशी फ़रमाएगा। ❄ **अ़र्ज़ की :**

www.dawateislami.net

कौन सी चीज़ मेरे गुनाहों को मिटा सकती है ? **इरशाद फ़रमाया :** आंसू, आ़जिज़ी और बीमारी । ❊ **अ़र्ज़ की :** कौन सी नेकी **अल्लाह** पाक के नज़दीक सब से अफ़्ज़ल है ? **इरशाद फ़रमाया :** अच्छे अख़्लाक़, तवाज़ोअ़, मसाइब पर सब्र और तक़्दीर पर राज़ी रेहना । ❊ **अ़र्ज़ की :** सब से बड़ी बुराई क्या है ? कौन सी बुराई **अल्लाह** पाक के नज़दीक सब से बड़ी है ? **इरशाद फ़रमाया :** बुरे अख़्लाक़ और बुख़्ल । ❊ **अ़र्ज़ की :** **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब को क्या चीज़ ठन्डा करती है ? **इरशाद फ़रमाया :** चुपके चुपके सदक़ा करना और सिलए रेह़मी । ❊ **अ़र्ज़ की :** कौन सी चीज़ दोज़ख़ की आग को बुझाती है ? **इरशाद फ़रमाया :** रोज़ा ।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा ह़दीसे पाक को बयान करने वाले बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास मुस्तग़फ़िरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इ़ल्म सीखने का जज़्बा मरह़बा सद मरह़बा कि फ़क़त़ एक ह़दीस की त़लब के लिए एक साल के रोज़े रखने को तय्यार हो गए और न सिर्फ़ तय्यार हुवे बल्कि उसे अ़मली जामा भी पेहनाया । इन के इस अ़मल से वोह इस्लामी भाई दर्स ह़ासिल करें जो फ़ी ज़माना आसान मवाक़ेअ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद इ़ल्मे दीन सीखने से जी चुराते हैं । नीज़ इस रिवायत से हमें येह भी दर्स मिला कि जब किसी आ़लिमे दीन से कुछ पूछना हो तो अदब के तक़ाज़े के पेशे नज़र अव्वलन उस से सुवाल पूछने की इजाज़त त़लब कर ली जाए ।

आ़लिमे दीन के पास ह़ाज़िर होने और सुवाल करने के आदाब

ह़ुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : (आ़लिमे दीन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने वाले को चाहिए कि

[1] ..... جامع الاحادیث، ۱۹/۴۰۵، حدیث: ۱۴۹۲۲

www.dawateislami.net

उसे) सलाम करने में पहेल करे, उस के सामने गुफ़्तगू कम करे, जब वोह खड़ा हो तो उस की ताज़ीम के लिए खड़ा हो जाए, उस के सामने यूं न कहे : फुलां ने तो आप के ख़िलाफ़ कहा है। उस की मौजूदगी में उस के हम नशीन से सुवाल न करे, उस से गुफ़्तगू करते वक़्त हंसे न उस की राए के ख़िलाफ़ मश्वरा दे। जब वोह खड़ा हो तो उस के दामन को न पकड़े, रास्ते में चलते हुवे उस से मसाइल न समझे, जब तक कि वोह घर न पहुंच जाए। आ़लिम की उक्ताहट के वक़्त उस के पास कम आया जाया करे।[1]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : आ़लिम के ह़क़ में से है कि उस से बहुत ज़्यादा सुवाल किए जाएं न उस से जवाब लेने में सख़्ती की जाए और जब उसे सुस्ती लाह़िक़ हो तो जवाब लेने के लिए उस के पीछे न पड़ा जाए।[2]

बिल वासिता सुवालात करना

फ़क़ीहे उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब सक़फ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सरकारे वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ औ़रतो ! सदक़ा किया करो अगर्चे अपने ज़ेवरात ही से करो। तो मैं अपने शौहर के पास गई और कहा : आप एक तंगदस्त शख़्स हैं और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया है, जाइए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछिए कि अगर मैं आप पर सदक़ा करूं तो क्या मेरी त़रफ़ से अदा हो जाएगा

[1] ..... مجموعہ رسائل امام غزالی، الادب فی الدین، آداب المتعلم مع العالم، ص ۴۳۱

[2] ..... کتاب الفقیہ و المتفقہ، باب تعظیم المتفقہ الفقیہ وھیبتہ...الخ، ۲/۱۹۸، رقم: ۸۵۶

www.dawateislami.net

अगर नहीं तो किसी और पर ख़र्च कर दूं। तो सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : तुम खुद ही चली जाओ। लेहाज़ा मैं बारगाहे नबवी में ह़ाज़िर हुई तो देखा कि अन्सार की एक औ़रत भी येही सुवाल करने के लिए दरे दौलत पर ह़ाज़िर है। हम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मरऊ़ब रेहती थीं, चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारी त़रफ़ आए तो हम ने उन से कहा : ख़िदमते अक़्दस में जा कर अ़र्ज़ कीजिए कि दो औ़रतें दरवाज़े पर इस सुवाल के लिए खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शौहर और ज़ेरे कफ़ालत यतीमों पर सदक़ा करें तो क्या उन की त़रफ़ से अदा हो जाएगा ? और ऐ बिलाल ! येह न बताइएगा कि हम कौन हैं। चुनान्चे, आप ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येह सुवाल किया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : वोह औ़रतें कौन हैं ? अ़र्ज़ की : अन्सार की एक औ़रत और ज़ैनब है। दरयाफ़्त फ़रमाया : कौन सी ज़ैनब ? अ़र्ज़ की : अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द की ज़ौजा। इरशाद फ़रमाया : उन दोनों के लिए दुगना अज्र है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा सदक़े का।[1]

नुमाइन्दा बन कर बारगाहे रिसालत में

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत सी औ़रतों की नुमाइन्दा बन कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह पाक ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मर्दों और औ़रतों दोनों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा है,

[1] .....مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ والصدقۃ علی...الخ، ص ۳۶۰، حدیث: ۴۵ (۱۰۰۰)

www.dawateislami.net

हम भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाई हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी करती हैं मगर सूरते ह़ाल येह है कि हम पर्दा नशीन बना कर घरों में बिठा दी गई हैं और अपने शौहरों की ख़्वाहिशात पूरी करतीं, उन के बच्चों को गोद में लिए फिरती हैं और जब वोह जिहाद पर जाते हैं तो उन के मालों और बच्चों की ह़िफ़ाज़त व परवरिश करती हैं, उधर मर्द ह़ज़रात नमाज़े जुम्आ, जनाज़ों और जिहादों में शिर्कत कर के अज्रो सवाब में हम से फ़ज़ीलत ले जाते हैं। अब **सुवाल** येह है कि उन मर्दों के सवाब में से कुछ ह़िस्सा हम औ़रतों को भी मिलेगा या नहीं ? येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : क्या तुम ने इस औ़रत की गुफ़्तगू को सुना ? इस ने अपने दीन के बारे में कितना अच्छा सुवाल किया है ! फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अस्मा ! जा कर औ़रतों से केह दो अगर वोह अपने शौहरों की ख़िदमत गुज़ारी कर के उन को ख़ुश रखें और हमेशा अपने शौहरों की ख़ुशनूदी त़लब करती रहें और उन की फ़रमां बरदारी करती रहें तो मर्दों के आमाल के बराबर ही औ़रतों को भी सवाब मिलेगा । येह सुन कर ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا मारे ख़ुशी के तक्बीर व तेहलील[1] केहती हुई बाहर निकलीं ।[2]

इल्म ह़ासिल करने के मुतअ़ल्लिक़ इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है :

مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ لِلْمَعَادِ ۔۔۔ فَازَ بِفَضْلٍ مِّنَ الرَّشَادِ[3]

1 ....**तक्बीर** से اَللّٰهُ اَكْبَر और **तेहलील** से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه केहना मुराद है ।

2 .....الاستیعاب، کتاب النساء و کناھن، باب الالف، ۳۲۶۷-اسماء بنت یزید، ۴/۳۵۰ مفھومًا

3 .....تعلیم المتعلم طریق التعلم، فصل فی النیۃ فی حال التعلم، ص ۱۵

www.dawateislami.net

तर्जमा : जिस ने आख़िरत के लिए इल्म हासिल किया, उस ने फ़ज़्ल यानी हिदायत को पा लिया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तसरीह़ व तौज़ीह़ के लिए सुवालात करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया : ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक ने तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया है लेहाज़ा ह़ज करो ! एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हर साल ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे ह़त्ता कि उन्हों ने तीन बार सुवाल किया। तो इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं हां केह देता तो हर साल वाजिब हो जाता और तुम न कर पाते। फिर फ़रमाया : जब तक मैं किसी बात को बयान न करूं तुम मुझ से सुवाल न करो, अगले लोग कसरते सुवाल और फिर अम्बिया की मुख़ालफ़त से हलाक हुवे, लेहाज़ा जब मैं किसी बात का हुक्म दूं तो जहां तक हो सके उसे करो और जब मैं किसी बात से मन्अ़ करूं तो उसे छोड़ दो।[1]

शारेह़े मिश्कात, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ कुछ यूं तेह़रीर फ़रमाते हैं : (सुवाल) अ़र्ज़ करने वाले (सह़ाबी) ह़ज़रते अक्रअ़ बिन ह़ाबिस थे, वोह समझे येह कि हर रमज़ान में रोज़े फ़र्ज़ होते हैं तो चाहिए कि (हर) बक़र ईद में ह़ज फ़र्ज़ हो फिर येह सोचा कि इस में लोगों को बहुत दुश्वारी होगी क्यूंकि रोज़े तो अपने घर में ही रख लिए जाते हैं मगर ह़ज के लिए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा

[1] ..... مسلم، کتاب الحج، باب فرض الحج مرۃ فی العمر، ص۴۹۹، حدیث: ۱۳۳۷

www.dawateislami.net

जाना पड़ता है और अत्राफ़े आ़लम से हर साल बैतुल्लाह शरीफ़ पहुंचना बहुत मुश्किल होगा इस लिए आप ने येह सुवाल किया और बार बार किया ताकि मस्अला वाज़ेह़ हो जाए।(1)

कौन सा फ़िर्क़ा नजात पाएगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूले ग़ैबदान, रेह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : बनी इसराईल 72 फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो गए थे और मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों में तक़्सीम हो जाएगी, उन में से एक के इ़लावा सब जहन्नम में जाएंगे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा फ़िर्क़ा नजात पाएगा ? इरशाद फ़रमाया : (जो इस त़रीक़े पर होगा) जिस पर मैं और मेरे सह़ाबा हैं।(2)

अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर मुसलमान पर सदक़ा है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर न पाए ? इरशाद फ़रमाया : अपने हाथ से काम करे, अपने को नफ़्अ़ पहुंचाए और सदक़ा भी दे। अ़र्ज़ की : अगर इस की इस्तित़ाअ़त न हो या न करे ? इरशाद फ़रमाया : साह़िबे ह़ाजत परेशान की इआ़नत (मदद) करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : नेकी का

1....मिरआतुल मनाजीह़, ह़ज का बयान, पेहली फ़स्ल, 4 / 86 ब तग़य्युर क़लील।

٢........ترمذی، کتاب الایمان، باب (ماجاء فی افتراق) ھذہ الامۃ، ص ٦٢٢، حدیث: ٢٦٤١

www.dawateislami.net

हुक्म करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : शर से बाज़ रहे कि येही उस के लिए सदक़ा है।[1]

दीगर अस्लाफ़े किराम का त़र्ज़े अ़मल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुवालो जवाब के ज़रीए इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने का येह सिलसिला फ़क़त दौरे नबवी तक ही मेह़दूद न रहा बल्कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी इसे जारी रखा और आज तक येह सिलसिला क़ाइम है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रेहती दुन्या तक जारी रहेगा। जैल में अस्लाफ़ के चन्द इ़ल्मी मुज़ाकरों का ह़ाल पेशे ख़िदमत है :

पूरी रात मुज़ाकरे में गुज़ार दी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इ़शा के बाद अगर्चे दुन्यावी बातें करना मन्अ़ है, मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि इ़शा के बाद ऐसी बातें करना मन्अ़ है, जिन में ख़ैर न हो और वोह बातें जो ख़ैरो भलाई की हों वोह रात भर जाग कर करते रेहने में भी कोई ह़रज नहीं।[2] जबकि उन **ख़ैर की बातों** से कौन सी बातें मुराद हैं, उन के मुतअ़ल्लिक़ दलीलुल फ़ालिह़ीन में है कि इ़शा के बाद ख़ैर की बातें करना मकरूह नहीं बल्कि मुस्तह़ब है और इन ख़ैर की बातों में इ़ल्मी मुज़ाकरे, सलफ़ सालिह़ीन (यानी बुज़ुर्गाने दीन) की ह़िकायात बयान करना और अख़्लाक़ को उ़म्दा करने वाली बातें करना वग़ैरा सब शामिल है।[3] चुनान्चे, येही वज्ह

[1] ..... بخاری، کتاب الادب، باب کل معروف صدقة، ص۱۵۰۱، حدیث: ۶۰۲۲

[2] ..... عمدة القاری، کتاب العلم، باب السمر فی العلم، ۲/ ۲۴۷

[3] ..... دلیل الفالحین، کتاب الامور المنهی عنه، باب کراهة الحدیث بعد العشاء الآخرة، ۴/ ۵۷۲

www.dawateislami.net

है कि सलफ़ सालिहीन رَحْمَةُاللهِ تعالٰی علَیْھِم से तो यहां तक साबित है कि वोह बसा अवक़ात रात रात भर जाग कर इल्मी मुज़ाकरे फ़रमाया करते थे। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने बत्ताल मालिकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 449 हिजरी) सह़ीह़ बुख़ारी की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : बिलाशुबा हमारे अस्लाफ़ रात भर जाग कर इल्मी मुज़ाकरे में मसरूफ़ रहा करते थे। जैसा कि एक रिवायत में है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े इशा के बाद अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो उन्हों ने पूछा : مَاجَآءَبِكَ कैसे आना हुवा ? अ़र्ज़ की : कुछ ज़रूरी काम था। इरशाद फ़रमाया : इस वक़्त ? अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह काम शरई़ मसाइल सीखने सिखाने से तअ़ल्लुक़ रखता है। इरशाद फ़रमाया : ऐसा है तो आ जाइए ! इस के बाद दोनों ह़ज़रात काफ़ी रात गए तक इल्मी मुज़ाकरे में मसरूफ़ रहे, फिर जब (तक़रीबन सह़री के वक़्त) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जाने की इजाज़त त़लब की तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बैठ जाइए ! कहां जा रहे हैं ? अ़र्ज़ की : (नमाज़े फ़ज्र का वक़्त होने वाला है, इस से पेहले पेहले) मैं चाहता हूं कि कुछ नवाफ़िल अदा कर लूं। इरशाद फ़रमाया : हम नमाज़ ही में हैं (कि घड़ी भर दीनी मसाइल की बातें करना रात भर की इ़बादत से बेहतर है)। चुनान्चे, वोह फिर बैठ गए और दोनों ह़ज़रात दोबारा शरई़ मसाइल के बारे में बातें करने लगे यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त हो गया।[1]

[1] ......شرح صحیح بخاری لابن بطال، کتاب العلم، باب السمر فی العلم، ۱/ ۱۹۲مفھومًا

www.dawateislami.net

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस त़रह़ इजाज़त देना और फिर ख़ुद भी सारी रात जाग कर उन के साथ दीनी मसाइल के बारे में बातें करना अपने इजतिहाद से न था, बल्कि उन्हें येह तरबियत **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिली थी । चुनान्चे, वोह ख़ुद फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुसलमानों के उमूर के मुतअ़ल्लिक़ तबादलए ख़याल करने के लिए बसा अवक़ात अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां रात के वक़्त तशरीफ़ ले जाते और एक बार तो मैं भी साथ था जब पूरी रात इसी त़रह़ बातें करते हुवे गुज़र गई थी ।[1]

अस्लाफ़ के चन्द मज़ीद मुज़ाकरों का तज़किरा

❀ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लैला अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के साथ रात भर इ़ल्मी मुज़ाकरे में मसरूफ़ रेहते ।[2]

❀ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के बड़े शेहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुजतबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी रात इ़ल्मी मुज़ाकरे में गुज़ारना साबित है ।[3]

[1] .....مسند احمد، مسند العشرة...الخ، ۲-مسند عمر بن الخطاب، ۱/۱۱۱، حدیث: ۱۷۷ ملتقطًا

[2] .....مصنف ابن ابی شیبه، کتاب صلاة التطوع والامامة، من رخص فی ذلك...الخ، ۲/۱۸۱، حدیث: ۲

[3] .....المرجع السابق، ۲/۱۸۲، حدیث: ۴

www.dawateislami.net

❀ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बाज़ अवक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के[1] और बाज़ अवक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां रात रात भर इ़ल्मी मुज़ाकरे में मसरूफ़ रेहते।[2]

❀ मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अख़्याफ़ी भाई[3] ह़ज़रते सय्यिदुना वलीद बिन अ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां इ़ल्मी मुज़ाकरे की मह़ाफ़िल सजाया करते थे।[4]

❀ ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के शेहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बसा अवक़ात अपनी ख़ाला उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में रात के वक़्त ह़ाज़िर होते तो इ़ल्मी मुज़ाकरे में इतना वक़्त गुज़र जाता कि उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इरशाद फ़रमाया करतीं : (बस करो अब तो) सुब्ह़ हो गई है। इसी त़रह़ एक रिवायत में है कि बसा अवक़ात दीगर मुअ़ज़्ज़ज़ीने क़ुरैश भी रात की इस मेह़फ़िल में शरीक होते।[5]

❀ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ भी मरवी है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी इ़शा के बाद देर गए तक इ़ल्मी मेह़फ़िल सजाया

[1] ..... مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من رخص فی ذلک... الخ، ۲/۱۸۱، حدیث: ۳

[2] ..... المرجع السابق، ۲/۱۸۲، حدیث: ۸

[3] ....अख़्याफ़ी से मुराद मां शरीक भाई होते हैं यानी जिन की मां एक हो और बाप अलग अलग हों।

[4] ..... مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من رخص فی ذلک... الخ، ۲/۱۸۲، حدیث: ۶

[5] ..... المرجع السابق، ۲/۱۸۲، حدیث: ۷، ۹

www.dawateislami.net

करते थे ।[1] बल्कि एक रिवायत में तो यहां तक है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का भी बसा अवक़ात येही मामूल रेहता था ।[2]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह वोह मिसालें हैं, जिन में हमारे अस्लाफ़ रात रात भर या रात का एक त़वील हिस्सा जाग कर इ़ल्मी मुज़ाकरे फ़रमाया करते थे, मगर ऐसी रिवायात की भी कमी नहीं जिन में दिन के अवक़ात में मुज़ाकरों का तज़किरा मिलता है । बरकत के लिए जैल में दो वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

इमामे आज़म का इ़ल्मी मुज़ाकरा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और कमो बेश 16 ताबेईन (यानी जिन्हों ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत पाई, उन) से अह़ादीसे करीमा रिवायत की हैं । हर मस्अले के ह़ल के लिए आप की ज़ात मर्जए ख़लाइक़ थी (यानी कसीर लोग मसाइल के ह़ल के लिए आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते) । इसी ख़ुसूसिय्यत की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बे मिसाल समझा जाता था । अपने वक़्त के अ़ज़ीम मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आमश सुलैमान बिन मेहरान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का शुमार इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के असातेज़ा में होता है जो न सिर्फ़ शह्रे कूफ़ा

[1] ..... مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب صلاۃ التطوع والامامۃ، من رخص فی ذلك...الخ، ۲/۱۸۲، حدیث: ۱۰

[2] ..... المرجع السابق، ۲/۱۸۲، حدیث: ۱۲

www.dawateislami.net

बल्कि पूरे इराक़ में इल्मे ह़दीस के ह़वाले से मश्हूर थे। एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आमश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से कुछ इल्मी सुवालात किए, जिस पर सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ऐसे इल्मी और फ़िक़्ही जवाबात इरशाद फ़रमाए कि उस्तादे मोह़तरम ह़ैरान व शशदर रेह गए, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आमश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने इस लाइक़ और होनहार शागिर्द से पूछा : आप ने येह जवाबात कहां से सीखे और समझे ? सय्यिदुना इमामे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : आप ने जो हमें फुलां फुलां रिवायात बयान कीं थीं, बस उन्हीं की बुन्याद पर मैं ने येह जवाबात बयान किए हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आमश رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप की ख़ुदादाद कुव्वते ह़ाफ़िज़ा और बे मिसाल फ़क़ाहत (फ़िक़्ही महारत) देख कर बे साख़्ता पुकार उठे : आप तो त़बीब हैं और हम आप की तजवीज़ कर्दा दवाओं को फ़रोख़्त करने वाले (यानी आप कुरआनो ह़दीस के दलाइल से मसाइले शरइ़य्या निकालने वाले हैं और हम लोगों को बयान करने वाले।)[1]

आला ह़ज़रत और इल्मी मुज़ाकरा

आला ह़ज़रत, इमामे एह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से भी इल्मी मुज़ाकरों के बे शुमार वाक़िआ़त साबित हैं। आप के मल्फ़ूज़ात शरीफ़ में इस क़िस्म की मिसालें जगह जगह देखी जा सकती हैं। चुनान्चे,

दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले **आला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिशें** सफ़ह़ा 13 पर है : ह़ज़रते

[1] ....ह़ाफ़िज़ा कैसे मज़बूत़ हो, स. 30 بحوالہ الثقات لابن حبان، باب العین، علی بن معبد...الخ، ۵/۳۳۴

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का बयान है कि अज़ाने ज़ोहर हो चुकी थी, मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी और ह़ज़रते मौलाना रेहूमे इलाही رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیۡہِما सरकारे आला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर थे। नमाज़ की तय्यारी हो रही थी। इतने में एक आरिया (यानी ग़ैर मुस्लिम) आया और केहने लगा : अगर मेरे चन्द सुवालात के जवाबात दे दिए जाएं तो मैं और मेरी बीवी बच्चे सब मुसलमान हो जाएंगे। ना मालूम उसे जवाबात में कितना वक़्त लगता ? चुनान्चे, आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : कुछ देर ठेहर जाओ ! अभी नमाज़ का वक़्त हो गया है, नमाज़ के बाद اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे हर सुवाल का जवाब दिया जाएगा। वोह केहने लगा : एक सुवाल तो येही है कि आप के दीन में इ़बादत के पांच वक़्त क्यूं मुक़र्रर हैं ? परमेश्वर (ख़ुदा) की इ़बादत जितनी भी की जाए, अच्छी ही है। मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : येह एतिराज़ तो ख़ुद तुम्हारे ऊपर भी वारिद होता है। फिर मौलाना रेहूमे इलाही رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने फ़रमाया : तुम्हारे मज़हब की किताब **सत्यारथ प्रकाश** मेरे मकान पर मौजूद है, अभी मंगवा कर दिखा सकता हूं।

अल ग़रज़ तै पाया कि पेहले नमाज़ पढ़ ली जाए इतनी देर में किताब भी आ जाएगी, फिर اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ग़ैर मुस्लिम के दिल से कुफ़्रो **ज़लालत** की गन्दगी दूर की जाएगी। चुनान्चे, येह तीनों बुज़ुर्ग हुक्मे ख़ुदावन्दी बजा लाने के लिए मस्जिद तशरीफ़ ले गए और वोह ग़ैर मुस्लिम बाहर गेट के क़रीब बैठ गया। नमाज़ के बाद उस ने येह सुवालात किए : (1) अगर क़ुरआन

www.dawateislami.net

अल्लाह का कलाम है तो थोड़ा थोड़ा क्यूं नाज़िल हुवा ? एक दम क्यूं न आया जबकि ख़ुदा पाक तो उसे यक्बारगी उतारने पर क़ादिर था । 2 बक़ौल तुम्हारे आप के नबी को मेराज की रात ख़ुदा ने बुलाया था, अगर वोह वाक़ेई ख़ुदा के मेहबूब थे तो फिर दुन्या में वापस क्यूं भेज दिए गए ? 3 इबादत पांच वक़्त के मुतअ़ल्लिक़ **सत्यारथ प्रकाश** की इबारत देखना मशरूत़ हुई ।

उस के येह सुवाल सुन कर मुबल्लिग़े इस्लाम आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : मैं तुम्हारे सुवालों के जवाब अभी देता हूं, मगर तुम ने जो वादा किया है उस पर क़ाइम रेहना । कहा : हां ! मैं फिर केहता हूं कि अगर आप ने मेरे सुवालात के जवाब माक़ूल अन्दाज़ में दे दिए तो मैं अपने बीवी बच्चों समेत मुसलमान हो जाऊंगा । येह सुन कर मुबल्लिग़े इस्लाम की ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ अदा हुवे : तुम्हारे पेहले सुवाल का जवाब येह है कि जो शै ऐन ज़रूरत के वक़्त दस्तयाब होती है, दिल में उस की वक़्अ़त ज़्यादा होती है, इसी लिए कलामे पाक को ब तदरीज (यानी दरजा ब दरजा) नाज़िल किया गया । इन्सान बच्चे की सूरत में आता है फिर जवान होता है फिर बूढ़ा । अल्लाह पाक उसे बूढ़ा पैदा करने पर भी क़ादिर है, फिर बूढ़ा पैदा क्यूं न किया ? इन्सान खेती करता है, पेहले पौदा निकलता है, फिर कुछ अ़र्से बाद उस में बाली आती है, इस के बाद दाना बर आमद होता है, वोह ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर तो क़ादिर है एक दम ग़ल्ला पैदा कर दे, फिर ऐसा क्यूं न करता ?

अपने पेहले सुवाल का मुत़मइन कुन जवाब सुन कर वोह ग़ैर मुस्लिम ख़ामोश हो गया । मुबल्लिग़े इस्लाम का अन्दाज़े तब्लीग़ उस के दिल में घर कर चुका था, उस की दिली कैफ़िय्यत चेहरे से अ़यां थी । फिर किताब **सत्यारथ**

प्रकाश आ गई, जिस के तीसरे बाब (तालीम) पन्दरहवीं हेडिंग में येह इबारत मौजूद थी : अगनी होतर (यानी पूजा) सुब्हो शाम दो ही वक़्त करे। इसी त़रह़ चौथे बाब (ख़ानादारी) हेडिंग नम्बर 63 में येह इबारत मौजूद थी : सन्धया (हिन्दूओं की सुब्हो शाम की इबादत) दो ही वक़्त करना चाहे। येह इबारत सुन और देख कर उसे दूसरे सुवाल का जवाब भी मिल चुका था। अब वोह इस्लाम से मज़ीद क़रीब हो रहा था, लेहाज़ा उस ने मेराज वाले सुवाल का जवाब चाहा तो मुबल्लिगे़ इस्लाम, आ़शिके़ ख़ैरुल अनाम आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़बाने मुबारक से इल्मो हिक्मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : मेराज वाले सुवाल के जवाब को यूं समझना चाहे ! एक बादशाह अपने मुल्क के इन्तिज़ाम के लिए एक नाइब मुक़र्रर करता है, वोह सूबेदार या नाइब बादशाह के ह़स्बे मन्शा ख़िदमात अन्जाम देता है, बादशाह उस की कारगुज़ारियों से ख़ुश हो कर अपने पास बुलाता है और इन्आ़म व ख़िल्अ़ते फ़ाख़िरा (यानी बाइ़से फ़ख़्र लिबास) अ़त़ा फ़रमाता है न येह कि उसे बुला कर मुअ़त्त़ल कर देता है और अपने पास रोक लेता है। येह दिल नशीन कलाम सुन कर वोह ग़ैर मुस्लिम बे साख़्ता पुकार उठा : आप ने मुझे ख़ूब मुत़मइन कर दिया, मुझे मेरे सब सुवालों का जवाब मिल गया, मैं अभी अपने बीवी, बच्चों को लाता हूं और हम सब अपने बात़िल मज़हब को छोड़ कर दीने इस्लाम में दाख़िल होते हैं।[1]

तू ने बात़िल को मिटाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1....आला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिशें, स. 13
2....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 525

www.dawateislami.net

मदनी मुज़ाकरे की ज़रूरत व अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिए ! आशिक़ाने रसूल की मदनी तेहरीक दावते इस्लामी बिलाशुबा मस्जिद बनाओ और मस्जिद भरो तेहरीक है और अपने नाम के मुताबिक़ हक़ीक़त में भी इस का हर हर मदनी काम कुरआनो सुन्नत की रौशनी से माख़ूज़ है। चुनान्चे, देखा आप ने कि 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार मदनी काम **मदनी मुज़ाकरा** भी **अल्लाह** के मेहबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और अस्लाफ़ (बुज़ुर्गों) के तरीक़े से साबित है, क्यूंकि हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में शैख़े तरीक़त, अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आशिक़ाने रसूल को दरपेश सेंकड़ों मसाइल का हल अपने तजरिबात और शरीअत व तरीक़त की रौशनी में पेश फ़रमाते हैं और बिलाशुबा येह इस वक़्त की एक अहम ज़रूरत है। क्यूंकि आज के इस पुर फ़ितन दौर में हर तरफ़ जहालत (Illiteracy) का दौर दौरा है, अगर्चे आज के मुसलमान ने दुन्यवी मुआमलात में बहुत तरक़्क़ी कर ली है मगर **इल्मे दीन से दूरी** भी शायद इसी क़दर ज़्यादा नज़र आती है, **जी हां !** अगर मुआशरे पर एक तआइराना नज़र दौड़ाई जाए तो वाज़ेह तौर पर पता चलता है कि दुन्यवी तालीम हासिल करने वालों के मुक़ाबले में **दीनी तालीम** (हिफ़्ज़ो नाज़िरा कुरआने करीम और दर्से निज़ामी यानी आलिम कोर्स) हासिल करने वालों की तादाद बहुत कम है, डॉक्टर्ज़ (Doctors), एन्जीनियर्ज़ (Engineers), प्रोफ़ेसर्ज़ (Professors) के मुक़ाबले में **उलमाए किराम** की तादाद बहुत कम है और **मुफ़्तियाने किराम** तो शायद गिनती के होंगे, दुन्यवी तालीम की शर्हे ख़्वान्दगी

www.dawateislami.net

(Literacy rate) बहुत ज़्यादा है। **ऐ काश !** हमें **इल्मे दीन का शौक़** नसीब हो जाए, **ऐ काश !** हर घर से कम अज़ कम एक आ़लिमे दीन बने। जबकि यहां तो ह़ाल येह है कि एक तादाद रोज़ मर्रा (Daily) के बुन्यादी मसाइल (Basic issues) से भी ना वाक़िफ़ है, इन्सान सिर्फ़ मालो ज़र कमाने में मसरूफ़ है, ह़लालो ह़राम की कोई तमीज़ नहीं, बस माल आना चाहिए इस पर येही धुन सुवार है। इन ह़ालात में **मदनी मुज़ाकरा** बहुत अहम्मिय्यत का ह़ामिल है कि इस में अपनी शिर्कत को यक़ीनी बना कर मुख़्तसर से वक़्त में इल्मे दीन का बेश बहा ख़ज़ाना हाथ आ सकता है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **मदनी मुज़ाकरों** में कामयाब ज़िन्दगी (Successful life) गुज़ारने के त़रीक़े बयान किए जाते हैं।[1] लेहाज़ा **मदनी मुज़ाकरे** की अहम्मिय्यत व इफ़ादियत के पेशे नज़र ख़ुद भी शिर्कत कीजिए और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाइए।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इजतिमाई मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत के त़रीक़े

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत के त़रीक़े दर्जे ज़ैल हैं, जिन में से हर एक के साथ ब ख़ूबी मुस्तफ़ीज़ हुवा जा सकता है :

1 इन में सब से बेहतर और बेशुमार फ़ज़ाइलो बरकात का ह़ामिल त़रीक़ा येह है कि आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में पहुंच कर बराहे रास्त (Live)

1 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 10 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 5 अक्तूबर 2014 ईसवी

2 ....**मदनी मुज़ाकरों** के मज़ीद औसाफ़ जानने के लिए **तज़किरए अमीरे एह्ले सुन्नत** क़िस्त 8 का मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

www.dawateislami.net

मदनी मुज़ाकरा सुना जाए क्यूंकि यहां अक्सर अवक़ात शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ब नफ़्से नफ़ीस जल्वा अफ़रोज़ होते हैं। इस त़रीक़े में दीगर फ़वाइदो समरात के साथ साथ एक वलिए कामिल की सोह़बते बा बरकत का फ़ैज़ान भी नसीब होगा।

❷ दावते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मदनी चैनल के ज़रीए अपने अपने अ़लाक़े में तै शुदा सत़ह (मसलन अ़लाक़ा / डिवीज़न पर होने वाले इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरे** / जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन / बच्चों के मद्रसतुल मदीना में) ज़िम्मेदारान के साथ इजतिमाई त़ौर पर **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत की जाए।[1] क्यूंकि अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **मदनी मुज़ाकरा** इजतिमाई त़ौर पर ज़िम्मेदारान के साथ बैठ कर देखना ज़्यादा मुफ़ीद है।[2]

❸ घर (Home), दुकान (Shop), दफ़्तर (Office) वग़ैरा में केबल (Cable), डिश एन्टीना (Dish Antina) या इन्टरनेट (Internet) वग़ैरा के ज़रीए **मदनी मुज़ाकरा** देखने / सुनने की तरकीब बनाई जाए। यानी जहां जिस के पास जैसी सुहूलत (Facility) मुयस्सर (Avail) हो, उस के ज़रीए **मदनी मुज़ाकरा** देखा और सुना जाए।

❹ दावते इस्लामी की आई टी मजलिस की पेशकर्दा मदनी चैनल एपलीकेशन (Madani Channel App) के ज़रीए भी **मदनी मुज़ाकरे** के फ़ुयूज़ो बरकात

1....मद्रसतुल मदीना / जामिअ़तुल मदीना में इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरा** देखने के शरई मदनी फूल आगे आ रहे हैं।

2....**मदनी मुज़ाकरा**, 18 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 7 फ़रवरी 2015 ईसवी

www.dawateislami.net

हासिल किए जा सकते हैं। मदनी चैनल की एपलीकेशन (Application) दावते इस्लामी की वेब साइट (www.dawateislami.net) से डाउनलोड (Download) की जा सकती है।

5 मोबाइल या कम्प्युटर के ज़रीए दावते इस्लामी की वेबसाइट (Website), Youtube, Facebook पर **बराहे रास्त** (Live) देखने के अलावा **टेलीग्राम** (Telegram) Application डाउनलोड (Download) कर के इस **लिंक** https://t.me/MadaniMuzakra के ज़रीए **भी "मदनी मुज़ाकरा"** देखा और सुना जा सकता है :

नोट : इस्लामी बहनें इनफ़िरादी तौर पर अपने घरों में **मदनी मुज़ाकरा** देखेंगी। हर ईसवी माह के पेहले हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में बिलख़ुसूस इस्लामी बहनों से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात का सिलसिला होता है।

आ़शिक़े मदनी मुज़ाकरा

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के रुक्न का बयान है : जिन दिनों मेह़बूबे अ़त्तार, मुबल्लिग़े दावते इस्लामी व रुक्ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, ह़ाजी अबू जुनैद ज़म ज़म रज़ा अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى बीमारी में मुब्तला थे तो मेरी कई मरतबा फ़ोन (Phone) पर बात हुई तो फ़रमाते : दुआ़ कीजिए कि त़बीअ़त इतनी तो ठीक हो जाए कि मैं अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत के लिए पहुंच सकूं, कई मरतबा तो त़बीअ़त नासाज़ होने के बा वुजूद ज़म ज़म नगर से सफ़र (Travel) कर के फ़ैज़ाने मदीना **मदनी मुज़ाकरे** में पहुंच जाया करते थे। उन के एक रिश्तेदार का बयान कुछ यूं है कि कई मरतबा ऐसा हुवा कि मैं मेह़बूबे अ़त्तार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मिलने उन के घर

www.dawateislami.net

पहुंचा तो येह दो ज़ानू बैठे अदब से हाथ बांध कर मदनी चैनल पर **मदनी मुज़ाकरा** मुलाहज़ा कर रहे होते, अल ग़रज़ उस वक़्त भी उन का अन्दाज़ ऐसा होता था कि गोया येह अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में हाज़िर हैं।[1]

अगर बिलफ़र्ज़ आप किसी शदीद मजबूरी के बाइस इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत न कर पाएं तब भी **मदनी मुज़ाकरे** की बरकतों से ख़ुद को मेहरूम न होने दें और मदनी चैनल पर मदनी इन्आम नम्बर : 47 पर अमल करते हुवे **मदनी मुज़ाकरा** देखें अलबत्ता येह याद रहे कि हमारा मदनी काम इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरा** है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी मुज़ाकरों की तफ़्सील ता दमे तेहरीर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी मुज़ाकरे देखने / सुनने और तेहरीरी **मदनी मुज़ाकरे** पढ़ने से बिलाशुबा अक़ाइदो आमाल और ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह, महब्बते इलाही व इश्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ न सिर्फ़ शरई, तिब्बी, तारीख़ी और तन्ज़ीमी मालूमात का ला जवाब ख़ज़ाना हाथ आता है बल्कि मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होता है। लेहाज़ा हर ख़ासो आम अपनी रेहनुमाई के लिए फ़ैज़ाने **मदनी मुज़ाकरा** मेमोरी कार्डज़ (Memory Cards) क़िस्तवार मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन तलब या दावते इस्लामी की **वेब साइट** www.ilyasqadri.com से download किया जा सकता है।

[1] ....मेहबूबे अत्तार की 122 हिकायात, स. 33

www.dawateislami.net

नोट : इस *website* से आप ह़ासिल कर सकेंगे अमीरे एह्ले सुन्नत के कुतुबो रसाइल (उर्दू मअ़ बाज़ मुख़्तलिफ़ तराजिम), अमीरे एह्ले सुन्नत के **मदनी मुज़ाकरे**, बयानात, सिलसिले, वीडियो क्लिप *video,audio* बाज़ मुख़्तलिफ़ ज़बानों में *dumb*, बाज़ मुख़्तलिफ़ ज़बानों में *subtitle* और बहुत कुछ। इसी त़रह़ *mobile app* पर भी।

"या इलाही फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा आ़म हो" के छब्बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा के (26) मदनी फूल

1 फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1] इस लिए **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** का हर ज़िम्मेदार अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ाकर्दा 72 **मदनी इन्आ़मात** में से **मदनी इन्आ़म नम्बर 1** पर अ़मल करते हुवे येह निय्यत करता रहे : मैं **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिए दावते इस्लामी के शोबे **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** का मदनी काम मदनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

2 **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** का मदनी काम दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक आ़म इस्लामी भाई और ज़िम्मेदारान (ज़ैली ह़ल्क़ा ता शूरा, हर शोबा और इन की ज़ैली मजालिस बिल ख़ुसूस जामिआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और दारुल मदीना के असातेज़ा व नाज़िमीन,

[1] ..... معجم کبیر، یحیی بن قیس الکندی عن ابی حازم، ۳/۵۲۵، حدیث: ۵۸۰۹

www.dawateislami.net

त़लबा, वक़्फ़ मुबल्लिग़ीन और दीगर मदनी अ़मला) बल्कि तमाम आ़शिक़ाने रसूल को हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में इजतिमाई त़ौर पर शिर्कत का आ़दी बनाने के लिए उन्हें दावत पेश करना, **मदनी मुज़ाकरे** के जुम्ला इन्तिज़ामात की पेशगी तय्यारी व ख़बरगीरी करना, नीज़ अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबारका और दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुतास्सिर और मुन्सलिक होने वालों की त़ै शुदा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ मदनी बहारें, दीगर ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त और (ऑडियो / वीडियो / तेह़रीरी) **सुवालात** पेशगी रेकॉर्ड (Record) करवाना और मेल (Mail) करने की तरकीब बनाना है।

3 **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** के ज़िम्मेदारान, दीगर फ़राइज़ उ़लूम के साथ साथ अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमाम कुतुबो रसाइल का मुत़ालआ़ करें। अपने ज़ाती मसाइल के इ़लावा शोबे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले शरई मसाइल, त़ै शुदा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **दारुल इफ़्ता एह्ले सुन्नत** से ह़ल करवाएं।

4 हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** के लिए मुतअ़ल्लिक़ा निगरान की मुशावरत और शरई राहनुमाई के साथ डिवीज़न सत़ह़ पर इजतिमाअ़ गाह का इन्तिज़ाम किया जाए, मौसम के मुत़ाबिक़ वहां ज़रूरी इन्तिज़ामात मसलन पार्किंग, मजलिसे सिक्यूरिटी (Security), शुरकाए इजतिमाअ़ के बैठने के लिए मुनासिब जगह, लाइट, जनरेटर, LCD और इन्टरनेट (Internet) वग़ैरा का इन्तिज़ाम कीजिए।

5 इजतिमाअ़ गाह में मुख़्तलिफ़ शोबाजात के मकातिब मसलन मदनी क़ाफ़िला, मदनी बहारें, मक्तबतुल मदीना, तावीज़ाते अ़त्तारिय्या के स्टॉल लगाए जाएं।

6 **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** में बिल ख़ुसूस ऐसे इस्लामी भाइयों को ज़िम्मेदारी दी जाए जो **मदनी मुज़ाकरे** देखने / सुनने के आ़दी हों।

www.dawateislami.net

डिवीज़न सत्ह पर इजतिमाअ़ गाह की 3 रुक्नी मजालिस बनाई जाएं, इन मजालिस के ज़िम्मेदारान हर हफ़्तावार इजतिमाअ़ के शुरका पर इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए, आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में इजतिमाई तौ़र पर **मदनी मुज़ाकरा** देखने की भरपूर तरग़ीब दिलाएं। इस मजलिस में कम अज़ कम एक ऐसा इस्लामी भाई भी हो जो WhatsApp, FTP, Handi Came, Internet वग़ैरा का इस्तिमाल भी जानता हो।

7 हर हफ़्ते **मदनी मुज़ाकरे** के मक़ामात की पेशगी तादाद लें और **मदनी मुज़ाकरे** के अगले दिन कारकर्दगी (तादादे शुरका) मुतअ़ल्लिक़ा ज़ोन ज़िम्मेदार **मजलिसे हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** / निगराने मजलिस को मेल (Mail) करें।

8 रिहाइशी मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना (लिल बनीन) में भी इजतिमाई तौ़र पर **मदनी मुज़ाकरा** देखने की तरकीब की जाए, नीज़ मद्रसतुल मदीना ऑन लाइन, मदनी कोर्सिज़ ग़रज़ हर शोबे में **मदनी मुज़ाकरे** की कारकर्दगी का निज़ाम बनाया जाए।

9 मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल, मदनी क़ाफ़िलों में भी **मदनी मुज़ाकरे** की दावत ख़ूब आ़म करें। (मदनी क़ाफ़िले के दौरान हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** का इन्तिज़ाम कर के इजतिमाई तौ़र पर देखने की कोशिश करें)

10 दावते इस्लामी के मदनी माहौ़ल में होने वाले एतिकाफ़ में मजलिसे इजतिमाई एतिकाफ़ की मुआ़वनत से मुकम्मल माह के एतिकाफ़ के इब्तिदाई 20 दिनों में ख़ारिजे मस्जिद वीडियो (Video) **मदनी मुज़ाकरे** और आख़िरी 10 दिनों में सब मक़ामात पर ऑडियो (Audio) **मदनी मुज़ाकरों** को सुना जाए।

11 **मदनी मुज़ाकरों** की मदनी बहारों को तै शुदा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़

www.dawateislami.net

रेकॉर्ड करवाया जाए, अगर येह सूरत न हो तो लिख लिया जाए। (मदनी बहार फ़ॉर्म पुर करते वक़्त देख लीजिए कि कवाइफ़ (फ़ोन नम्बर और एड्रेस वग़ैरा) ना मुकम्मल तो नहीं, अगर ना मुकम्मल हों तो हाथों हाथ मुकम्मल करवा लीजिए। अगर किसी मक़ाम पर मदनी बहार फ़ॉर्म न हो तो सादा काग़ज़ पर मदनी मर्कज़ के बयान कर्दा त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ लिखवा कर जम्अ़ करवा दीजिए)।

12 बैरूने मुल्क अपने यहां के वक़्त के लेहाज़ से बराहे रास्त (Live) **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत न हो सके तो अगले दिन नस्रे मुक़र्रर (Repeat) में शिर्कत करें या मुनासिब वक़्त पर वेब साइट www.dawateislamihind.net से डाउन लोड कर के इजतिमाई त़ौर पर शिर्कत करें।

13 रुक्ने काबीना / रुक्ने ज़ोन, तमाम अराकीने काबीना व अराकीने ज़ोन की हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत की कारकर्दगी हर इतवार को अपने निगराने काबीना व निगराने ज़ोन को दें।

14 अराकीने काबीना निगराने काबीना से, अराकीने ज़ोन निगराने ज़ोन से वक़्त ले कर हर इतवार जामिअ़तुल मदीना लिल बनीन और पीर शरीफ़ मद्रसतुल मदीना लिल बनीन में **मदनी मुज़ाकरा** दोहराई इजतिमाअ़ का जदवल बनाएं।

15 डिवीज़न सत़्ह़ पर हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरों** के मक़ामात फ़िक्स कर के उन मक़ामात की हफ़्तावार इजतिमाआ़त और दीगर इजतिमाआ़त में उस की तश्हीर की जाए।

16 ह़दीसे पाक में है : تَهَادَوْا تَحَابُّوْا यानी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो, आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।[1] पर अ़मल की निय्यत से ज़िम्मेदारान शैख़े त़रीक़त, अमीरे

[1] ..... مؤطا امام مالك، كتاب حسن الخلق، باب ماجاء في المهاجرة، ص ۴۸۳، حديث: ۱۷۳۱

www.dawateislami.net

एह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के बयानात, **मदनी मुज़ाकरों** और वीडियो क्लिप्स की DVDs, CDs, VCDs, Memory Cards वग़ैरा की ज़ाती तौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त और मुख़य्यर इस्लामी भाइयों से तरकीब बना कर हर माह पाबन्दी से लंगर (मुफ़्त तक़्सीम करने) और फ़रोख़्त भी करें, मज़ीद मक्तबतुल मदीना की दीगर मत़बूआ़ कुतुबो रसाइल व VCDs ख़ुशी व ग़मी (शादी, फ़ौतगी, चेहलुम व उ़र्स वग़ैरा), तक्लीफ़ व आज़्माइश (बे रोज़्गारी, बे औलादी व नाचाक़ी और बीमारी वग़ैरा) के मवाक़ेअ़ पर तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब दिलाना मुफ़ीद है।

⑰ **मदनी क़ाफ़िला, मदनी इन्आ़मात, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ के माहाना अहदाफ़ :** मजलिस के हर सत़ह के ज़िम्मेदारान अपने निगराने मुशावरत के मश्वरे से **मदनी क़ाफ़िलों, मदनी इन्आ़मात, इस्लाहे़ आमाल कोर्स, 12 मदनी काम कोर्स** के माहाना अहदाफ़ तै़ करें और इस के लिए भरपूर कोशिश भी फ़रमाएं।

⑱ कारकर्दगी जम्अ़ करवाने की तारीख़ें :

❀ **हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा** इजतिमाअ़ गाह ज़िम्मेदार : 2

❀ डिवीज़न : 3 ❀ काबीना : 4 ❀ ज़ोन : 5 ❀ रीजन : 7

⑲ मदनी मश्वरों की कसरत से बचने के लिए मुक़र्रर कर्दा सत़ह के इलावा किसी और सत़ह का मदनी मश्वरा लेने के लिए मुतअ़ल्लिक़ा निगरान से इजाज़त ज़रूरी है। ❀ जब बड़ी सत़ह के ज़िम्मेदार दीगर सत़ह के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा कर लें तो उस माह उन का माहाना मदनी मश्वरा नहीं होगा ❀ इसी त़रह़ जिस माह निगराने काबीना / मुशावरत शोबे के ज़िम्मेदारान का मदनी मश्वरा फ़रमाएंगे, उस माह भी शोबा ज़िम्मेदारान माहाना मदनी मश्वरा

नहीं करेंगे। (शोबे के मदनी काम को मज़बूत और मुनज़्ज़म करने के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अपने निगराने मुशावरत से शोबे के इस्लामी भाइयों का मश्वरा करवाना मुफ़ीद है।

20 बैरूने मुल्क सत्ह के ज़िम्मेदार हर ईसवी माह की 7 तारीख़ तक कारकर्दगी मजलिसे बैरूने मुल्क और अपने निगराने ममालिक को मेल (Mail) कर दें। (याद रहे ! कारकर्दगी मदनी मश्वरे से मशरूत नहीं, अगर किसी वज्ह से मदनी मश्वरा न हो सके तब भी मुक़र्ररा तारीख़ पर अपने निगरान को कारकर्दगी पेश कर दें।)

21 हर ज़िम्मेदार हर माह का पेशगी जदवल ईसवी माह की 19 तारीख़ तक अपने निगरान (निगराने मुशावरत / निगराने मजलिस) से मन्ज़ूर करवाए, फिर उस के मुताबिक़ पेशगी इत्तिलाअ़ के साथ अपने जदवल पर अ़मल करे और महीना मुकम्मल होने के बाद 3 तारीख़ तक कारकर्दगी जदवल अपने निगरान (निगराने मुशावरत / निगराने मजलिस) को पेश करे।

22 अपने निगरान की मुशावरत से शोबा ज़िम्मेदारान मंगल के रोज़ तेहरीरी काम का जदवल बनाएं।

23 अपने निगराने मुशावरत से मरबूत रहें। उन्हें अपनी कारकर्दगी से आगाह रखें और उन से मश्वरा करते रहें। जो निगरान से जितना ज़्यादा मरबूत रहेगा वोह उतना ही मज़बूत होता जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

24 ज़िम्मेदारान अपनी दुन्या और आख़िरत की बेहतरी के लिए दर्जे ज़ैल उमूर को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं :

25 फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की कोशिश करते रहें। फ़र्ज़ उ़लूम सीखने के लिए कुतुबे अमीरे एह्ले सुन्नत, बहारे शरीअ़त, फ़तावा रज़विय्या, एह्याउल उ़लूम

www.dawateislami.net

वग़ैरा के मुत़ालए़ की आ़दत बनाएं । ख़ुसूसन इस्लामी अ़क़ाइद के लिए किताबुल अ़क़ाइद (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना), बहारे शरीअ़त का पेहला हि़स्सा, कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब । मसाइल सीखने के लिए बहारे शरीअ़त के मुन्तख़ब अब्वाब और हि़स्सों के साथ साथ अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के जुम्ला कुतुबो रसाइल, अच्छे बुरे अख़्लाक़ की मालूमात ह़ासिल करने के लिए बाति़नी बीमारियों की मालूमात का मुत़ालआ़ कीजिए । मुत़ालआ़ करने के लिए कुछ वक़्त (मसलन : बादे फ़ज्र मदनी ह़ल्क़े के बाद 19 मिनट) अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कुतुबो रसाइल के लिए और इसी त़रह़ दीगर कुतुब के लिए कुछ वक़्त ख़ास कीजिए । (मसलन : बादे मग़रिब व क़ब्ले त़आ़म 19 मिनट)

26 (हफ़्तावार इजतिमाई त़ौर पर देखे जाने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत को यक़ीनी बनाइए, इस की बरकत से इ़ल्मे दीन का ला ज़वाल ख़ज़ाना हाथ आएगा, नीज़ **मदनी इन्आ़म नम्बर : 47** पर अ़मल करते हुवे मदनी चैनल के सिलसिले, इस्लाही़ बयानात के साथ साथ फ़ैज़ाने **मदनी मुज़ाकरा** और फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम मेमोरी कार्ड (Memory Card) सुनने का भी सिलसिला रखिए, इस से भी कसीर फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल होंगे । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

❀ **12 मदनी काम कोर्स** भी बाज़ फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है ।

❀ अ़मली त़ौर पर मदनी कामों में शरीक हों, रोज़ाना कम अज़ कम 2 घन्टे मदनी कामों में सर्फ़ कीजिए मसलन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के लिए रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र का ज़ेह्न देने के लिए कम अज़ कम 2 इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश, अ़लाक़ाई दौरा, मद्रसतुल

www.dawateislami.net

मदीना बालिग़ान, बादे फ़ज्र मदनी हल्क़ा, सदाए मदीना, चौक दर्स, पाबन्दिए वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त में शिर्कत वग़ैरा।

❀ अपने मदनी मक़्सद को पेशे नज़र रखते हुवे रोज़ाना ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए उ़म्र भर में यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में 1 माह (30 दिन) और हर माह कम अज़ कम 3 दिन जदवल के मुत़ाबिक़ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करते रहें।

❀ बिला नाग़ा ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे अ़त्तार का प्यारा, दोस्त, मन्ज़ूरे नज़र और मेह़बूबे अ़त्तार बनने की सई जारी रखिए, इस्तिक़ामत पाने के लिए कम अज़ कम 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मामूल बना लीजिए, नीज़ ज़रूरी गुफ़्तगू कम लफ़्ज़ों में कुछ इशारे में और कुछ लिख कर करने की कोशिश के साथ साथ निगाहें झुका कर रखने की आ़दत बनाएं।

❀ मर्कज़ी मजलिसे शूरा, काबीना और अपने शोबे के मदनी मश्वरों के मिलने वाले मदनी फूलों का ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिए और मुतअ़ल्लिक़ा तमाम ज़िम्मेदारान तक बर वक़्त पहुंचाने की कोशिश करें।

❀ दौराने मदनी काम व मुलाक़ात अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए़ सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में मुरीद / त़ालिब बनाने की कोशिश करते रहें, मुरीद / त़ालिब हो जाएं तो मजलिसे मक्तूबातो तावीज़ाते अ़त्तारिय्या से मक्तूब मंगवाने और शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या ह़ासिल करने और रोज़ाना पढ़ने की तरग़ीब भी दिलाएं।

www.dawateislami.net

❀ मदनी काम इस्तिक़ामत के साथ करने के लिए बिल ख़ुसूस मदनी इन्आ़म नम्बर 24 और 26 के आ़मिल बन जाएं / मदनी इन्आ़म नम्बर 24 : क्या आज आप ने मर्कज़ी मजलिसे शूरा, ज़ोन, मुशावरतें व दीगर तमाम मजालिस जिस के भी आप मा तह़्त हैं, उन की (शरीअ़त के दाइरे में रेह कर) इत़ाअ़त फ़रमाई ? / मदनी इन्आ़म नम्बर 26 : किसी ज़िम्मेदार (या आ़म इस्लामी भाई) से बुराई सादिर हो जाए और इस्लाह़ की ज़रूरत मेह़सूस हो तो तेह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त मिल कर (दोनों सूरतों में नर्मी के साथ) समझाने की कोशिश फ़रमाई या مَعَاذَاللّٰه बिला इजाज़ते शरई किसी और पर इज़्हार कर के ग़ीबत का गुनाहे कबीरा कर बैठे ?

मदीना : बैरूने मुल्क के ज़िम्मेदारान मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा के मश्वरे व इजाज़त से इन मदनी फूलों में तरमीम व इज़ाफ़ा कर सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मसाजिद, मदनी मराक्ज़, जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना में मदनी चैनल वग़ैरा दिखाने के मदनी फूल

1. दुन्या भर की किसी मस्जिद में मदनी चैनल या vcd या कोई भी रेकॉर्डेड सिलसिला या मदनी ख़ाका दिखाने की इजाज़त नहीं है।
2. येह मुमानअ़त ऐने मस्जिद के साथ साथ फ़िनाए मस्जिद के लिए भी है।
3. येह मुमानअ़त हर उस ख़ारिजे मस्जिद के लिए भी है कि जो मस्जिद के प्लॉट की चार दीवारी में हो। ख़्वाह वोह मेह़राब के आगे हो या मस्जिद के दाएं, बाएं या पीछे। ख़्वाह जगह कम हो या ज़्यादा। ग़रज़ जिस चार दीवारी में अस्ले मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद के साथ ख़ारिजे मस्जिद, मस्जिद की चार दीवारी के अन्दर हो वहां मदनी चैनल नहीं देख सकते।

www.dawateislami.net

4 ऐसा ख़ारिजे मस्जिद जो मस्जिद से बिल्कुल मुमताज़ व जुदा हो जहां मदनी चैनल देखना मस्जिद के अन्दर (यानी मस्जिद के इह़ाते में) देखना न समझा जाए वहां मदनी चैनल देखा जा सकता है।

5 ऐसे मद्रसे (मदारिसुल मदीना, जामिआ़तुल मदीना) कि जो अपनी शरई ह़ैसिय्यत से तो मुस्तक़िल मद्रसे हैं लेकिन अपनी हैअत के एतिबार से मस्जिद का ह़िस्सा नज़र आते हैं या किसी एक ही इ़मारत में ऊपर या नीचे किसी एक पोरशन में मस्जिद की निय्यत है, दूसरे में मद्रसे की, मसाजिद के वोह फ़िना जहां बच्चों (मदनी मुन्नों) के मद्रसे लगते हैं आ़म तौ़र पर लोग उस जगह को मद्रसा बोलते हैं, इन तमाम जगहों पर मदनी चैनल चलाने की इजाज़त नहीं।

6 मसाजिद के साथ बा क़ाइ़दा मुस्तक़िल अलग इ़मारत की सूरत में जो मद्रसे (मदारिसुल मदीना, जामिआ़तुल मदीना) होते हैं, उन में मदनी चैनल देखने की इजाज़त है।

7 मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना में इन के तह़्त त़लबा की मदनी तरबियत के लिए जब मदनी चैनल वग़ैरा देखा जाता हो, उन अवक़ात में अगर कुछ अ़लाक़े वाले भी शामिल हो गए तब भी ह़रज नहीं।

8 मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना की छुट्टियों में इशाअ़ते इ़ल्मे दीन व दीनी तरबियत के लिए मदनी चैनल के सिलसिलों के लिए अ़वामी इजतिमाआ़त कर सकते हैं।

9 नफ़्ली एतिकाफ़ करने वाले इब्तिदाई 20 दिन इस त़रह़ के मद्रसों (मदारिसुल मदीना, जामिआ़तुल मदीना) में, इन के अय्यामे तात़ीलात में मदनी चैनल देख सकते हैं, ताहम उन के जदवल में ज़्यादा तर वक़्त मस्जिद में इ़बादत और सीखने सिखाने का सिलसिला हो।

www.dawateislami.net

⑩ सुन्नते मुअक्कदा एतिकाफ़ (आख़िरी अ़श्रे) में Audio के ज़रीए़ मदनी चैनल से टेलीकास्ट वाले **मदनी मुज़ाकरे** / बयानात सुनाने की भी इजाज़त नहीं। (मुमानअ़त की वज्ह येह है कि बाज़ अवक़ात केबल वालों की त़रफ़ से चैनल की ट्यूनिंग के सबब अचानक कोई दूसरा चैनल लग जाता है, इसी त़रह़ सेटेलाइट के ज़रीए़ भी दूसरे चैनल लग जाने का ख़दशा रेहता है। नेट के ज़रीए़ ऑडियो लिंक लेने से भी बाज़ अवक़ात, दूसरी साइटस खुली होने के सबब इ़श्तिहारात चलना शुरूअ़ हो जाते हैं। इन तमाम चीज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे मसाजिद में ऑडियो लिंक चलाने से मन्अ़ किया गया ताकि मसाजिद में इस त़रह़ की कोई नाख़ुश गवार बात वाक़ेअ़ न हो। ऑडियो लिंक लेने में ज़िक्र कर्दा ख़राबियों में से हर त़रह़ की ख़राबी से तह़फ़्फ़ुज़ हो तो ऑडियो लिंक के ज़रीए़ मसाजिद में इजतिमाई़ एतिकाफ़ के मोतकिफ़ीन को मदनी चैनल चलाने सुनाने की इजाज़त है। 15 रमज़ानुल मुबारक 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 31 मई 2018 ईसवी)

⑪ आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के लिए जो इस्तिस्ना है वोह मुतअ़ल्लिक़ा मजलिस को बयान किया जा चुका है, निगराने शूरा زید مجدہ को इस की तेह़रीर भी दे दी गई है।

इजतिमाई़ एतिकाफ़ के तअ़ल्लुक़ से चन्द मसाइल

❀ इजतिमाई़ एतिकाफ़ के मोतकिफ़ीन का खाना मदारिस के किचन में बनाना और मदारिस के बरतन इस्तिमाल करना जाइज़ नहीं।

❀ इजतिमाई़ एतिकाफ़ के मोतकिफ़ीन के खाने पकाने के लिए मस्जिद की बिजली व गेस और चाए बनाने के लिए इलेक्ट्रिक केटल वग़ैरा का इस्तिमाल करना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

❀ मोतकिफ़ीन के खाने के लिए फ़िनाए मस्जिद में तन्दूर लगाना और फ़िना ही में चूल्हे लगा कर देगें पकाना जाइज़ नहीं।

❀ मस्जिद की दरियों को तेह कर के उन का बिस्तर बनाना या उन को बतौ़रे तकिया इस्तिमाल करना मन्अ़ है।

❀ मदनी मराकिज़ (फ़ैज़ाने मदीना) के इलावा दीगर अ़लाक़ाई मसाजिद में पूरे माहे रमज़ान एतिकाफ़ के लिए मसाजिद के जनरेटर इस्तिमाल किए जाते हैं जिस की वज्ह से मस्जिद के अख़राजात पर भारी बोझ पड़ता है, इस के लिए मजलिस को चाहिए कि मुख़य्यर ह़ज़रात से राबिता़ कर के इस महीने की बिजली व जनरेटर के अख़राजात वुसूल करें।

❀ इजतिमाई एतिकाफ़ के मोतकिफ़ीन को मस्जिद के पानी से कपड़े धोने की इजाज़त नहीं। (इफ़्ता मक्तब, यकुम रमज़ान 1437 हिजरी ब मुताबिक़ 7 जून 2016 ईसवी)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदनी मुज़ाकरे के बारे में अमीरे एह्ले सुन्नत के मदनी फूल

❁ **मदनी मुज़ाकरे** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करें। अधूरी शिर्कत न की जाए।

❁ अगर **जामिअ़तुल मदीना** के असातेज़ा (Teachers) बा क़ाइदगी से **मदनी मुज़ाकरों** में शिर्कत करें तो मदनी कामों की धूम मच जाए।[1]

❁ **मदनी मुज़ाकरे** में मालूमात और अख़्लाक़ी तरबियत होती है।[2]

1 ....ख़ुसूसी **मदनी मुज़ाकरा**, 7 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हिजरी ब मुताबिक़ 31 अक्तूबर 2014 ईसवी

2 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 8 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुताबिक़ 3 अक्तूबर 2014 ईसवी

www.dawateislami.net

❁ जो ज़िम्मेदारान बा क़ाइदगी से **मदनी मुज़ाकरे** सुनते हैं, उन्हें मालूमात का ख़ज़ाना ह़ासिल होता है ।[1]

❁ **मदनी मुज़ाकरे** में ज़रूर शिर्कत किया करें, मैं इन में अपनी ज़िन्दगी का निचोड़ और ख़ुलासा बयान करता हूं ।[2]

❁ **मदनी मुज़ाकरों** में तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें अव्वल ता आख़िर शिर्कत किया करें, इस में ह़स्बे ह़ाल सब के लिए मदनी फूल होते हैं ।[3]

❁ तमाम अराकीने शूरा हर **मदनी मुज़ाकरे** में इस्लामी भाइयों को इकठ्ठा कर के इजतिमाई सूरत में शिर्कत करें और मदनी चैनल (Madani Channel) पर अपनी वीडियो दिखाएं ।[4]

❁ **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करते रहेंगे तो गुनाहों से बचने का ज़ेहन बन जाएगा ।

❁ बा क़ाइदगी से हफ़्ते (Saturday) को **मदनी मुज़ाकरा** होता है, इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करें अगर वसाइल न हों तो तन्हा ज़रूर देखें । जो दावते इस्लामी का ज़िम्मेदार तन्हा भी शिर्कत न करे तो वोह **ग़ैर ज़िम्मेदार** है ।[5]

1 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 2 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 27 सितम्बर 2014 ईसवी
2 ....ख़ुसूसी **मदनी मुज़ाकरा**, 7 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 2 अक्तूबर 2014 ईसवी
3 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 10 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 5 अक्तूबर 2014 ईसवी
4 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 16 जुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 11 अक्तूबर 2014 ईसवी
5 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 7 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 31 अक्तूबर 2014 ईसवी

www.dawateislami.net

❁ जो मजालिस वाले हफ़्तावार इजतिमाआ़त और **मदनी मुज़ाकरों** में शिर्कत करते, बयान करते, दावते इस्लामी के मदनी कामों में अ़मलन शरीक होते हैं, उन की अ़मली ह़ालत भी अच्छी होती है ।(1)

❁ दर्से निज़ामी के साथ मुत़ालआ़ ज़रूरी है, **मदनी मुज़ाकरा** भी मालूमात का ख़ज़ाना है ।(2)

❁ हर जगह **मदनी मुज़ाकरों** को इजतिमाई त़ौर पर देखा जाए, इस में जनरेटर (Generator) का भी इन्तिज़ाम (Arrange) किया जाए, इस का बहुत फ़ाएदा (Benefit) होगा ।(3)

❁ **अल्लाह** करे वोह दिन आए कि सब **मदनी मुज़ाकरे** के शाइक़ीन बन जाएं ।(4)

❁ **मदनी मुज़ाकरा** देखने की अस्ल रूह़ येह है कि दुन्या व माफ़ीहा से बे नियाज़ हो कर तवज्जोह से देखा सुना जा सके ।(5)

❁ अपनी बेटरी (Battery) चार्ज (Charge) रखने के लिए हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और बराहे रास्त (Live) होने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में इजतिमाई त़ौर पर शिर्कत फ़रमाया करें ।(6)

❁ दावते इस्लामी की वेब साइट (Website) के ज़रीए़ रोज़ाना (Daily) एक घन्टा 12 मिनट **मदनी मुज़ाकरा** सुना और देखा जा सकता है ।(7)

1 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 दिसम्बर 2014 ईसवी
2 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 17 रबीउ़ल अव्वल 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 8 जनवरी 2015 ईसवी
3 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 25 जनवरी 2015 ईसवी
4 ....ख़ुसूसी **मदनी मुज़ाकरा**, 6 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 26 जनवरी 2015 ईसवी
5 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 24 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 फ़रवरी 2015 ईसवी
6 ....ख़ुसूसी **मदनी मुज़ाकरा**, 24 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 फ़रवरी 2015 ईसवी
7 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 25 रबीउ़ल आख़िर 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 16 फ़रवरी 2015 ईसवी

www.dawateislami.net

❁ जुमेरात (Thursday) को बादे मग़रिब दावते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ और हफ़्ते को बादे इशा हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरा** होता है, इन में शिर्कत का मामूल बनाइए। इन दो दिनों में कोई घरेलू तक़रीब न रखी जाए तो मदीना मदीना।[1]

❁ ऐसे 12 बल्कि 25 इस्लामी भाइयों को तय्यार करें कि वोह अपने घर या क़रीबी ख़ाली जगह में **मदनी मुज़ाकरा** देखने दिखाने के लिए इजतिमाई जदवल बनाएं। चाए नाश्ते का भी इन्तिज़ाम कर लें तो मदीना मदीना। इस त़रह़ एक इस्लामी भाई की बारी काफ़ी अ़र्से बाद आएगी।[2]

❁ दौराने **मदनी मुज़ाकरा** सोने वालों को न जगाएं बल्कि उन का चेहरा पेहचान लें, जागने के बाद महब्बत से आइन्दा **मदनी मुज़ाकरों** में शिर्कत की दावत दें।[3]

❁ ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाई इन अल्फ़ाज़ के साथ नेकी की दावत दें : प्यारे इस्लामी भाई ! मस्जिद में रेह़मतों का नुज़ूल हो रहा है, इल्मे दीन और सुन्नतों के ख़ज़ाने तक़्सीम हो रहे हैं आप भी मस्जिद में तशरीफ़ ले चलें और **मदनी मुज़ाकरे** में शरीक हो जाएं।[4]

मदनी मुज़ाकरे के मुतअ़ल्लिक़ मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी फूल

❁ **मदनी मुज़ाकरा** बहुत बड़ी नेमत है।[5]

1 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 20 रजबुल मुरज्जब 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 9 मई 2015 ईसवी
2 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 20 रजबुल मुरज्जब 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 9 मई 2015 ईसवी
3 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 25 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12 जून 2015 ईसवी
4 ....**मदनी मुज़ाकरा**, 25 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12 जून 2015 ईसवी
5 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 27 ता 28 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 23 ता 24 दिसम्बर 2011 ईसवी

www.dawateislami.net

❁ जब अमीरे एह्ले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی **मदनी मुज़ाकरा** या मदनी मश्वरा फ़रमाएं तो तमाम तर काम और जदवल छोड़ कर आप के क़दमों में ही होना चाहिए ।[1]

❁ रोज़ाना एक **मदनी मुज़ाकरा** सुनने की आ़दत बनाएं । बिल ख़ुसूस अपनी ज़िम्मेदारी से मुतअ़ल्लिक़ **मदनी मुज़ाकरे** मुन्तख़ब कर के लाज़िमी सुन और लिख लें । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन तन्ज़ीमी तरबियत का सिलसिला रहेगा ।[2] (इस के लिए www.ilyasqadri.com से तन्ज़ीमी मदनी फूलों में जा कर मुतअ़ल्लिक़ा शोबे के मदनी फूल देखें)

❁ मदनी चैनल पर जब भी बराहे रास्त (Live) **मदनी मुज़ाकरा** नश्र (Telecast) हो तो तमाम ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी, अपनी तमाम तर तन्ज़ीमी मसरूफ़िय्यात छोड़ कर इस में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल किया करें ।[3]

❁ **मदनी मुज़ाकरा** तरबियत का बेहतरीन ज़रीआ़ है ।[4]

❁ मजलिसे **मदनी मुज़ाकरा** हदफ़ बनाए कि हम ने उ़मूमन हर मुसलमान और ख़ुसूसन तमाम दावते इस्लामी वालों को **मदनी मुज़ाकरा** दिखाना है ।

❁ जो किसी वज्ह से **मदनी मुज़ाकरा** नहीं देख पाते, उन के लिए भी **मदनी मुज़ाकरा** दिखाने की सूरत निकाली जाए । मसलन ❁ जहां इजतिमाई तौ़र

1 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 3 ता 8 अप्रेल 2006 ईसवी

2 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 22 ता 24 मुह़र्रमुल ह़राम 1428 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 11 ता 13 फ़रवरी 2007 ईसवी

3 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 15 ता 16 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1431 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 ता 23 नवम्बर 2010 ईसवी

4 ....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 2 ता 5 ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 6 ता 9 अगस्त 2016 ईसवी

www.dawateislami.net

पर **मदनी मुज़ाकरा** नहीं देखा जा सकता वहां इनफ़िरादी तौ़र पर देखा जाए ❁ बैरूने मुल्क जहां अवक़ात के फ़र्क़ की वज्ह हो, वहां नश्रे मुकर्रर (Re Telecast) के तौ़र पर चलने वाले मुज़ाकरे में शिर्कत करवाई जाए ❁ जहां ज़बान (Language) का मस्अला है, वहां के लोगों के लिए डबिंग (Dubbing) करवाने के लिए कोशिश करें। ❁ जामिअ़तुल मदीना, मद्रसतुल मदीना और दारुल मदीना वग़ैरा (जिन में इदारती निज़ाम है) यहां हर हफ़्ते पाबन्दी के साथ **मदनी मुज़ाकरा** दिखाना मुतअ़ल्लिक़ा मजलिस की भी तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी है। यहां मक़ामी ज़िम्मेदारान त़लबा व असातेज़ा के साथ मिल कर हर हफ़्ते **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करें।

❁ इत़ाअ़त का जज़्बा पैदा करने के लिए **मदनी मुज़ाकरा**, देखने दिखाने का जदवल बनाए, अव्वल ता आख़िर शिर्कत करें, कोशिश करें कि अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का कोई जुम्ला रेह न जाए।[1]

रोज़ाना मदनी मुज़ाकरा सुनने की मदनी बहार

एक इस्लामी भाई का बयान है कि यूं तो बचपन ही से दामने अ़त्तार से वाबस्ता था मगर शैत़ान मर्दूद ने दुन्या के पुर फ़रेब नज़ारों में बुरी त़रह़ उलझा रखा था। ज़िन्दगी के बेश क़ीमत माह व साल ग़फ़्लत में बसर हो रहे थे कि ख़ुश क़िस्मती से एक बार किसी मुबल्लिग़े दावते इस्लामी से मुलाक़ात हो गई, जिन्हों ने मुझ से पूछा : क्या आप अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात सुनते हैं ? मैं ने सच बोला कि नहीं। तो वोह केहने लगे कि अमीरे

[1]....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 1 ता 5 रजबुल मुरज्जब 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 9 ता 13 अप्रेल 2016 ईसवी

www.dawateislami.net

एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **जो रोज़ाना एक बयान सुनता है मैं उस से ख़ुश होता हूं।** इन अल्फ़ाज़ ने मेरे दिल में छुपी अपने मुर्शिदे करीम से महब्बत को बेदार कर दिया। चुनान्चे, मैं ने मक्तबतुल मदीना से जारीकर्दा 50 **मदनी मुज़ाकरों** पर मुश्तमिल वी सी डी ख़रीद ली और रोज़ाना एक **मदनी मुज़ाकरा** सुनने की सआ़दत पाने लगा। अमीरे एह्ले सुन्नत की पुर तासीर गुफ़्तगू की बरकत से दिन ब दिन गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से महब्बत बढ़ने लगी, अभी चन्द ही **मदनी मुज़ाकरे** सुने थे कि मेरे हुलिए, किरदार और अन्दाज़े ज़िन्दगी में तब्दीली आने लगी और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा ही न मिला बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मदनी कामों में भी दिलचस्पी लेने लगा। अल ग़रज़ **मदनी मुज़ाकरों** के ज़रीए मेरी ऐसी मदनी तरबियत हुई जो 26 सालह ज़िन्दगी में कभी न हुई थी।[1]

मदनी मुज़ाकरे से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातों और मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवाल जवाब

शरई एह़तियातें

सुवाल 1 : क्या दौराने **मदनी मुज़ाकरा अवरादो वज़ाइफ़** पढ़ सकते हैं ?

जवाब : बेहतर येही है कि किसी क़िस्म के अवरादो वज़ाइफ़ में मश्ग़ूल न हों और सिर्फ़ शैख़े त़रीक़त अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी फूल सुनें जो कि आप की ज़िन्दगी का निचोड़ भी हैं, नीज़ वाज़ो नसीह़त पर मब्नी बातें सुनते हुवे ख़ामोश रेहना चाहिए जैसा कि हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली

1....अजनबी का तोह़फ़ा, स. 28 मुख़्तसरन।

www.dawateislami.net

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : (वाज़ सुनने वाले को) चाहिए कि हमेशा ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (आ़जिज़ी व इन्किसारी) की कैफ़िय्यत पैदा करने की कोशिश करे, जो कुछ सुने उसे याद रखने की कोशिश करे, **हमेशा ख़ामोश रेहने की आ़दत अपनाए ।**[1]

सुवाल 2 : मदनी मुज़ाकरे में सुवाल करते हुवे दीनी या दुन्यावी मन्सब बयान करना रियाकारी में तो नहीं आएगा ?

जवाब : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिए वोही है जिस की वोह निय्यत करे ।[2] लेहाज़ा **मदनी मुज़ाकरे** में या कहीं भी जो कोई अपना दीनी या दुन्यावी मन्सब जिस निय्यत से बयान करेगा उसी के मुताबिक़ हुक्म होगा अगर अपनी शोहरत और वाह वाह करवाने या रियाकारी का इरादा हुवा तो गुनहगार होगा और अगर तेह़दीसे नेमत या बतौ़रे तरग़ीब बयान करे तो ह़रज नहीं, बल्कि बाइ़से अज्रो सवाब है ।

अच्छी अच्छी निय्यतों का हो ख़ुदा, जज़्बा अ़ता बन्दए मुख़्लिस बना, कर अ़फ़्व मेरी हर ख़ता

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुवाल 3 : मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद में वीडियो (*Video*) **मदनी मुज़ाकरा** देखने का क्या शरई हुक्म है ?

[1] ..... مجموعہ رسائل امام غزالی، الادب فی الدین، آداب المستمع، ص ۴۳۳

[2] ..... بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللہ، حدیث: ۱

www.dawateislami.net

जवाब : मन्अ़ है। इफ़्ता मक्तब के मदनी फूल जब आ गए तो इस की ह़ाजत न रही।

सुवाल 4 : मदनी मुज़ाकरे में किसी इस्लामी भाई का अच्छे लफ़्ज़ों में तज़्किरा हुवा तो उस इस्लामी भाई का वोह वीडियो क्लिप (Video Clip) सब को दिखाते फिरना कैसा ?

जवाब : मुत़्लक़न तो ह़रज नहीं। इन्सानी फ़ित़रत है कि इन्सान अपनी तारीफ़ पर ख़ुश होता है। हां अगर वोह ख़ूबी उस में न हो तो तारीफ़ पर ख़ुश होना मन्अ़ है।

सुवाल 5 : मदनी मुज़ाकरे में बत़ौरे इम्तिह़ान सुवाल करना कैसा ?

जवाब : उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम को परेशान करने या उन का इम्तिह़ान लेने या उन की ला इ़ल्मी ज़ाहिर करने के लिए सुवाल करना नाजाइज़ व गुनाह है। किसी को परेशान करने या उस का इम्तिह़ान लेने के लिए सुवाल करने के बारे में ह़दीसे पाक है : ह़ज़रते मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहेलियां (बुझारतें) डालने से मन्अ़ फ़रमाया है।[1] इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त करते हुवे अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उ़म्दतुल क़ारी में लिखते हैं : इस ह़दीसे पाक से मुराद येह है कि जब कोई शख़्स किसी को परेशान करने या उस को आ़जिज़ यानी उस की ला इ़ल्मी ज़ाहिर करने या उस को शर्मिन्दा और ज़लील करने के लिए सुवाल करे (तो येह सुवाल करना जाइज़ नहीं है)।[2] और फ़त्हुल बारी में है : यानी इस ह़दीसे पाक से मुराद येह है कि ऐसा सुवाल करना जिस का कोई फ़ाएदा न हो या मसऊल (यानी जिस

[1] ..... ابوداود، کتاب العلم، باب التوقی فی الفتیا، ص ۵۸۰، حدیث: ۳۶۵۶

[2] ..... عمدۃ القاری، کتاب العلم، باب قول المحدث حدثنا او اخبرنا و انبانا، ۲/۲۱، تحت الحدیث: ۶۱

www.dawateislami.net

से सुवाल किया गया उस) को परेशान करने या उस को आ़जिज़ यानी उस की ला इ़ल्मी ज़ाहिर करने के लिए सुवाल करना।[1] सिरातुल जिनान फ़ी तफ़्सीरुल क़ुरआन जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 186 पर है : अ़वामुन्नास को चाहिए कि इस बात को पेशे नज़र रखें कि उ़लमा और मुफ़्तियाने किराम से वोही सुवाल किए जाएं जिन की ह़ाजत हो, ज़मीन पर बैठ कर ख़्वाह म ख़्वाह चांद पर रेहाइश के सुवाल न किए जाएं। बाज़ लोग उ़लमा को परेशान करने या उन का इम्तिह़ान लेने या उन की ला इ़ल्मी ज़ाहिर करने के लिए सुवाल करते हैं येह सब नाजाइज़ हैं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें जिस काम से मन्अ़ करूं उस से रुक जाओ और जिस काम का हुक्म दूं उसे अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ करो, तुम से पेहले लोगों को उन के सुवालात की कसरत और अपने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से इख़्तिलाफ़ करने ने हलाक किया[2]।[3]

सुवाल 6 : दौराने **मदनी मुज़ाकरा** केमेरे के सामने जान बूझ कर ऐसी शक्लो सूरत बनाना या कोई ऐसा काम करना (मसलन कोई ख़ास प्ले कार्ड हाथ में उठाए रखना वग़ैरा) कि बार बार उस की तस्वीर मदनी चैनल पर आए कैसा ?

जवाब : येह कोशिश करना कि मैं मदनी चैनल पर आ जाऊं शरअ़न इस में कोई ह़रज नहीं। अलबत्ता कोई नेक अ़मल इस निय्यत से करना ताकि केमेरा (Camera) में आऊं तो येह दुरुस्त नहीं, क्यूंकि ऐसा करना इख़्लास के मनाफ़ी

[1] ..... فتح الباری، کتاب العلم، باب قول المحدث حدثنا او اخبرنا و انبانا، ۱/۱۹۳، تحت الحدیث: ۶۱

[2] ..... مسلم، کتاب الفضائل، باب توقیرہ ﷺ وترک اکثار... الخ، ص ۹۲۰، حدیث: ۱۳۰-(۱۳۳۷)

[3] ....फ़तावा दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत, ग़ैर मत़बूआ़, रेफ़रन्स नम्बर : 5824 Sar

www.dawateislami.net

और रियाकारी के जुमरे में आता है, **अल्लाह** पाक की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना रियाकारी है।[1]

सुवाल 7 : सिर्फ़ **मदनी मुज़ाकरे** में अपने आप को नेक ज़ाहिर करने के लिए मदनी हुल्या, छोटा इ़मामा और दो दो चादरें ले कर सब से पेहले और सब से आगे बैठना ताकि बार बार इस पर निगाह जाए कैसा ?

जवाब : अगर येह आमाल सिर्फ़ इस लिए करता है ताकि ऐसा ज़ाहिर करे कि वोह हमेशा ही इसी लिबास में रेहता है ह़ालांकि ह़क़ीक़त इस के बर अ़क्स हो तो येह एक धोका है और धोका ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[2] अलबत्ता ! पीर की बारगाह में ह़ाज़िरी और उस की ख़ुशनूदी के लिए ऐसा करने में ब ज़ाहिर कोई ह़रज नहीं।

सुवाल 8 : मदनी मुज़ाकरे में कोई शरई मस्अला सुन कर आगे बयान करना कैसा ?

जवाब : अगर सह़ीह़ त़रह़ याद है जैसे बताया गया वैसे ही बताने की अहलिय्यत है तो ही बयान करें।

सुवाल 9 : क्या मदनी चैनल पर बराहे रास्त (Live) नश्र होने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में अगर कोई अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद या त़ालिब होना चाहे तो हो सकता है ?

जवाब : जी हां ! मदनी चैनल पर बराहे रास्त (Live) नश्र होने वाले **मदनी मुज़ाकरे** में अगर कोई अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद या त़ालिब होना चाहे तो हो सकता है।[3]

1 ....नेकी की दावत, स. 66

2 ....जहन्नम के ख़त़रात, स. 171

3 ....तफ़्सील के लिए देखिए : दारुल इफ़्ता एह्ले सुन्नत मर्कज़ुल औलिया, ब तारीख़ 11 शव्वालुल मुकर्रम 1432 ब मुत़ाबिक़ 10 सितम्बर 2011 ईसवी / फ़तावा एह्ले सुन्नत, आठवां हिस्सा, स. 20

www.dawateislami.net

सुवाल 10 **:** क्या एक शख़्स दो पीरों का मुरीद हो सकता है या नहीं ?

जवाब : जी नहीं ! एक शख़्स दो पीरों का मुरीद नहीं हो सकता, अलबत्ता ! दूसरे पीर का त़ालिब हो सकता है ।[1]

सुवाल 11 **:** हर बार **मदनी मुज़ाकरे** में अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तौबा व बैअ़त करवाते हैं जिस ने पेहले बैअ़त कर ली हो क्या वोह दोबारा बैअ़त हो सकता है ?

जवाब : जी हो सकता है ।

सुवाल 12 **:** क्या गुनाह करने से बैअ़त टूट जाती है ?

जवाब : गुनाह के इर्तिकाब से बैअ़त नहीं टूटती, अलबत्ता एक बार तौबा कर लेने के बाद अगर कोई दानिस्ता या नादानिस्ता किसी गुनाह का मुर्तकिब हो जाए तो वोह दोबारा तौबा करने में देर न करे कि तौबा के बाद गुनाह कर लेना एक मुसीबत है और दोबारा तौबा न करना मज़ीद नुक़्सान देह है ।[2]

सुवाल 13 **:** क्या रेकॉर्ड शुदा अल्फ़ाज़े बैअ़त से मुरीद हो सकते हैं ?

जवाब : रेकॉर्डेड अल्फ़ाज़ से बैअ़त न होगी, कि यहां रेकॉर्डिंग का हुक्म अस्ल की त़रह़ नहीं, जैसा कि रेकॉर्डेड अज़ान को हर अज़ान के वक़्त चला देने से अज़ान नहीं होती, इसी त़रह़ बैअ़त भी न होगी ।[3]

सुवाल 14 **:** क्या नापाकी की ह़ालत में या बारी के दिनों में बैअ़त हो सकती है ?

जवाब : नापाकी की ह़ालत में या बारी के दिनों में बैअ़त करने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि बैअ़त होते वक़्त त़हारत वाला (यानी पाक) होना लाज़िमी नहीं ।

1 ....तफ़्सील के लिए देखिए : फ़तावा एह्ले सुन्नत, आठवां ह़िस्सा, स. 21, फ़तावा रज़विय्या, 26 / 558

2 ....फ़तावा एह्ले सुन्नत, आठवां ह़िस्सा, स. 22 ता 24 माख़ूज़न

3 ....फ़तावा एह्ले सुन्नत, आठवां ह़िस्सा, स. 25 ब तसर्रुफ़ ।

www.dawateislami.net

अलबत्ता बैअ़त के दौरान ऐसी ह़ालत में क़ुरआनी आयत पढ़ना नाजाइज़ो ह़राम मगर कलिमए त़य्यिबा व दुरूद वग़ैरा का विर्द करना दुरुस्त है।[1]

सुवाल 15 **:** अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **मदनी मुज़ाकरे** में किसी इस्लामी भाई को कोई तोह़फ़ा अ़त़ा फ़रमाना और किसी दूसरे इस्लामी भाई का उस तोह़फ़े को तबर्रुक की ख़ातिर मांग लेना या चुरा लेना कैसा ?

जवाब : चुरा लेना क़त़्अ़न दुरुस्त नहीं और मांगने से भी बचना चाहिए, ख़ुसूसन ऐसी चीज़ जिसे देने में आज़माइश हो, हां छोटी सी कोई चीज़ जिसे देने में कोई मस्अला हो न सुवाल करने में ज़िल्लत का सामना हो तो मांगने में ह़रज नहीं।

सुवाल 16 **: मदनी मुज़ाकरे** में इस्लामी बहनों ने सुवाल करना हो तो इस के लिए क्या करें ?

जवाब : इस्लामी बहनों के लिए **हर अंग्रेज़ी महीने का पेहला हफ़्ता** मुक़र्रर है, इस में बिल ख़ुसूस इस्लामी बहनें अपने मदनी मुन्नों / मदनी मुन्नियों के ज़रीए सुवालात कराती हैं। येह सुवालात मदनी चैनल के नम्बर्ज़ पर पेशगी भेजने होते हैं। दौराने **मदनी मुज़ाकरा मदनी मुज़ाकरा** सुनें।

सुवाल 17 **: मदनी मुज़ाकरे** में मदनी मुन्नियां सुवाल करना चाहें तो उन की उ़म्र कितनी होनी चाहिए ?

जवाब : सात आठ साल तक होने में ह़रज नहीं।

तन्ज़ीमी एह़तियातें

सुवाल 1 **: मदनी मुज़ाकरे** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत से क्या मुराद है ?

जवाब : अव्वल से मुराद तिलावते क़ुरआने पाक है। अलबत्ता शैख़े त़रीक़त अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आमद पर भी अगर **मदनी मुज़ाकरे** में

[1]....फ़तावा एह्ले सुन्नत, आठवां ह़िस्सा, स. 26 ता 29 ब तसर्रुफ़।

www.dawateislami.net

शिर्कत हो जाए तो उसे भी अव्वल में शुमार कर लिया जाएगा और आख़िर से मुराद सलातो सलाम है।

सुवाल 2 **:** क्या **मदनी मुज़ाकरे** के वक़्त कोई और तन्ज़ीमी मसरूफ़िय्यत रख सकते हैं ?

जवाब : जब शैख़े त़रीक़त, अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मदनी मुज़ाकरा** या मदनी मश्वरा फ़रमाएं तो तमाम तर काम और जदवल छोड़ कर आप के क़दमों में ही होना चाहिए।

सुवाल 3 **:** डिवीज़न में एक जगह इजतिमाई त़ौर पर **मदनी मुज़ाकरा** हो रहा हो तो क्या उसी डिवीज़न में दूसरी जगह कोई ज़िम्मेदार अपने त़ौर पर अलग से इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरा** देख सकता है ?

जवाब : अगर एक जगह तादाद इतनी हो जाए कि मज़ीद गुन्जाइश न हो या इन्तिज़ामात कम पड़ जाएं तो दूसरी जगह भी देखा जा सकता है। अगर 26 से कम इस्लामी भाई हैं तो फिर दूसरी जगह न देखा जाए। (निगराने डिवीज़न मुशावरत निगराने काबीना से इजाज़त ले कर जगह का तअ़य्युन करें, ज़रूरतन ज़्यादा जगह भी इजतिमाई त़ौर पर **मदनी मुज़ाकरा** देखा जा सकता है)

सुवाल 4 **:** बराहे रास्त (Live) हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरा** सुनने के बजाए रेकॉर्ड शुदा **मदनी मुज़ाकरा** सुनने से क्या इस का मदनी इन्आ़म नम्बर 56 पर अ़मल माना जाएगा ?

जवाब : जी हां ! मदनी इन्आ़म नम्बर 56 पर अ़मल मान तो लिया जाएगा मगर शर्त़ येह है कि वोह बराहे रास्त (Live) हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत का आ़दी हो और किसी ह़क़ीक़ी मजबूरी की बिना पर उस हफ़्ते बराहे रास्त **मदनी मुज़ाकरा** देखने या सुनने की सआ़दत से मेह़रूम रहे, लेकिन

www.dawateislami.net

आइन्दा हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** से पेहले पेहले गुज़श्ता रेह जाने वाला **मदनी मुज़ाकरा** किसी भी ज़रीए से देख या सुन ले। अलबत्ता हमारा मदनी काम इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरा** ही है।

सुवाल 5 **:** क्या **मदनी मुज़ाकरे** को फ़क़त मुज़ाकरा कहा जा सकता है ?

जवाब : हमारी इस्तिलाह **मदनी मुज़ाकरा** है, इसे **मदनी मुज़ाकरा** ही कहा जाए।

सुवाल 6 **:** जिन दिनों **मदनी मुज़ाकरे** रोज़ाना होते हैं, मसलन (ज़ुल हिज्जतिल हराम के 10, आशूरा के 10, रबीउल अव्वल के 12, रबीउल आख़िर के 11 और रजब शरीफ़ के 6 **मदनी मुज़ाकरे**, माहे रमज़ान में बादे अस्र व बादे तरावीह) वग़ैरा, क्या इन में शिर्कत करना तन्ज़ीमी तौर पर लाज़िम है ?

जवाब : हमें हर **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करना चाहिए, बिल ख़ुसूस शेह्रे अत्तार में मौजूद इस्लामी भाइयों को तो उन ख़ुसूसी **मदनी मुज़ाकरों** में भी शिर्कत करना चाहिए जो मदनी चैनल पर बराहे रास्त नहीं होते। अलबत्ता ! याद रखिए कि हमारा मदनी इन्आम नम्बर 47 है **: क्या आज आप ने तन्हा या केसेट इजतिमाअ़ में कम अज़ कम एक बयान या मदनी मुज़ाकरे की ऑडियो / वीडियो केसेट बैठ कर सुनी या देखी या मदनी चैनल पर कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट नशरियात देखीं ?** जबकि हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** में इजतिमाई तौर पर अव्वल ता आख़िर शिर्कत हमारा मदनी काम है। चुनान्चे, अगर हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरे** के इलावा **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत नहीं की या कोई और तन्ज़ीमी मसरूफ़िय्यत रखी तो इसे **ग़ैर तन्ज़ीमी फ़ेल** नहीं कहा जाएगा।

सुवाल 7 **: मदनी मुज़ाकरे** में सुवाल करते हुवे बापाजान कहें या अमीरे एह्ले सुन्नत ?

जवाब : अमीरे एह्ले सुन्नत केहना बेहतर है।

www.dawateislami.net

मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवालात

सुवाल 1 : हाज़िरिए मदीना की टिकट की तरग़ीब दिला कर किसी को **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करवाना कैसा ?

जवाब : इस के ज़रीए इल्मे दीन के **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत का ज़ौक़ बढ़ता, साहिबे हैसिय्यत आशिक़ाने रसूल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का मौक़अ मिलता और कई ग़रीब इस्लामी भाइयों को सफ़रे मदीना की सआदत मिलती है। अलबत्ता ! **मदीने की टिकट व सफ़रे हज** की तरकीब फ़क़त **आलमी मदनी मर्कज़** फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना में होने वाले **मदनी मुज़ाकरों** के साथ ख़ास है।

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़ता दाता पिया आप को ख़्वाजा पिया का वासिता दाता पिया[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुवाल 2 : **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत की निय्यत क्या होनी चाहिए ?

जवाब : रिज़ाए इलाही, हुसूले इल्मे दीन वग़ैरा मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें भी की जा सकतीं हैं, जितनी निय्यतें ज़्यादा उतना सवाब ज़्यादा।

सुवाल 3 : लेट कर **मदनी मुज़ाकरा** देखना या सुनना कैसा ?

जवाब : सुन सकते हैं। अलबत्ता ! अगर मजबूरी न हो तो हत्तल इमकान दो ज़ानू बैठ कर अहम मदनी फूल लिखते हुवे **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत करनी चाहिए, इस दौरान मोबाइल फ़ोन बन्द (Off) या (Silent Mode) पर होना चाहिए।

सुवाल 4 : पेहला ऑन ऐर (On-air) **मदनी मुज़ाकरा** मदनी चैनल पर कब हुवा।

जवाब : पेहला **मदनी मुज़ाकरा** क़मरी तारीख़ के एतिबार से 20 **रमज़ानुल मुबारक** 1429 हिजरी ब मुताबिक़ 19 सितम्बर 2008 ईसवी को मदनी चैनल पर ऑन ऐर हुवा था।

[1] ....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 533

www.dawateislami.net

सुवाल 5 : मदनी चैनल से पेहले के **मदनी मुज़ाकरे** क्या ऑडियो या तेह़रीरी सूरत में मौजूद हैं ?

जवाब : जी हां ! दावते इस्लामी का उ़लमा पर मुश्तमिल शोबा अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या इस पर तेह़रीरी रसाइल का काम कर रहा है, जबकि दावते इस्लामी की वेब साइट (Website)[1] से मुकम्मल और मक्तबतुल मदीना से बाज़ **मदनी मुज़ाकरे** वी सी डी (ऑडियो) की शक्ल में ह़ासिल किए जा सकते हैं।

सुवाल 6 : मुबल्लिग़ीन व ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों के लिए **मदनी मुज़ाकरा** देखना व सुनना किस क़दर अहम्मिय्यत का ह़ामिल है ?

जवाब : मुबल्लिग़ीन व ज़िम्मेदारान के लिए **मदनी मुज़ाकरा** देखना व सुनना आ़म लोगों की निस्बत चन्द वुजूह से ज़्यादा अहम्मिय्यत का ह़ामिल है : (1) येह ह़ज़रात मदनी कामों की बदौलत लोगों से राबिते में रेहते हैं और बसा अवक़ात कोई शख़्स सुवाल कर लेता है कि फ़ुलां **मदनी मुज़ाकरे** में अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़ुलां बात की थी, मुझे चूंकि समझ नहीं आई या याद नहीं रही, लेहाज़ा करम फ़रमाइए और मुझे समझा या बता दीजिए, तो उस वक़्त मुबल्लिग़ या ज़िम्मेदार का केहना कि मैं ने वोह **मदनी मुज़ाकरा** नहीं देखा शर्मिन्दगी का बाइ़स हो सकता है। (2) इसी त़रह़ बाज़ अवक़ात **मदनी मुज़ाकरे** में कोई बात सुन कर लोग ग़लत़ फ़ेह्मी का शिकार हो जाते हैं अगर मुबल्लिग़ीन व ज़िम्मेदारान **मदनी मुज़ाकरा** देखने व सुनने वाले होंगे तो ब आसानी अ़वामुन्नास की ग़लत़ फ़ेह्मियां दूर कर सकेंगे। (3) इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स अमीरे एह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुतअ़ल्लिक़ कोई बात मन्सूब करता है कि ऐसा अमीरे एह्ले सुन्नत ने फ़रमाया है तो इस के दुरुस्त या ग़लत़ होने की भी बर वक़्त निशान देही मुमकिन हो सकेगी।

मदनी मुज़ाकरा है शरीअ़त का ख़ज़ीना अख़्लाक़ का तेहज़ीब का त़रीक़त का ख़ज़ीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1] ....दावते इस्लामी की वेब साइट का एड्रेस येह है : www.dawateislami.net। नीज़ याद रखिए कि येह एड्रेस दावते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ हर किताब और रिसाले के आख़िर में भी दिया गया होता है।

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

قرآن مجید	۞ ۞ ۞ ۞ ۞
کتاب	**مطبوعہ**
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۲ھ
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۹ھ
صراط الجنان فی تفسیر القرآن	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مؤطا امام مالک	دار المعرفہ بیروت ۱۴۳۳ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۰۹ھ
مسند احمد	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
صحیح البخاری	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۸ھ
صحیح مسلم	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
سنن ابی داود	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۸ھ
سنن الترمذی	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
مکارم الاخلاق للخرائطی	الفاروق الحدیثہ القاھرۃ ۱۴۳۲
المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیہ بیروت 2007ء
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ
المدخل الی السنن الکبریٰ للبیہقی	دار الخلفا للکتاب الاسلامی الکویت
جامع بیان العلم وفضلہ	دار ابن الجوزی ۱۴۳۵ھ
الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیہ بیروت 2010ء
جامع الاحادیث	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
شرح صحیح البخاری لابن بطال	مکتبۃ الرشد الریاض
فتح الباری	دار السلام الریاض ۱۴۲۱ھ
عمدۃ القاری	دار الفکر بیروت 2005ء

www.dawateislami.net

فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
دلیل الفالحین	دار الفکر بیروت 2013ء
مرأۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات
کتاب الفقیہ و المتفقہ	دار ابن الجوزی السعودیۃ ۱۴۱۷
بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ
فتاویٰ اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مجموعۂ رسائل امام غزالی	المکتبۃ التوفیقیۃ 2015ء
تعلیم المتعلم طریق التعلم	الدار السودانیہ للکتب
عوارف المعارف ملحق احیاء العلوم	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
راحت القلوب (فارسی)	مطبع مجتبائی دھلی ھند
فوائد الفؤاد (فارسی)	مطبع نولکشور ھند
نفحات الانس	کلکتہ ھند ۱۸۵۸ھ
حقائق عن التصوف	دار العرفان سوریۃ ۱۴۲۸
کتاب الثقات	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2010ء
جہنم کے خطرات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
محبوب عطار کی 122 حکایات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۴ھ
اجنبی کا تحفہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
حافظہ کیسے مضبوط ہو؟	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۷ھ
اعلیٰ حضرت کی انفرادی کوششیں	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائلِ بخشش (مرمّم)	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़	उ़नवान	सफ़ह़
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	**मदनी मुज़ाकरे** की ज़रूरत व अहम्मिय्यत	33
त़लबे इ़ल्म के ख़्वाहां	1	इजतिमाई **मदनी मुज़ाकरे** में शिर्कत के त़रीक़े	34
इ़ल्म सीखने का जज़्बा	3	आ़शिक़े **मदनी मुज़ाकरा**	36
इ़ल्म न सीखने के नुक़्सानात	4	**मदनी मुज़ाकरों** की तफ़्सील ता दमे तेह़रीर	37
इ़ल्म कहां से सीखा जाए ?	6	''या इलाही फ़ैज़ाने **मदनी मुज़ाकरा** आ़म हो'' के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से मजलिसे हफ़्तावार **मदनी मुज़ाकरा** के (26) मदनी फूल	38
बुज़ुर्गों की सोह़बत व मल्फ़ूज़ात का फ़ैज़ान	7		
फ़ी ज़माना क्या करें ?	10		
मदनी मुज़ाकरा और फ़रोग़े इ़ल्म	12		
मदनी मुज़ाकरे में सुवाल पूछने की अहम्मिय्यत	13		
इ़ल्म की कुन्जी	13	मसाजिद, मदनी मराकिज़, जामिअ़तुल मदीना और मद्रसतुल मदीना में मदनी चैनल वग़ैरा दिखाने के मदनी फूल	46
इ़ल्म में तरक़्क़ी का बाइ़स	14		
पूछने से न शर्माइए !	14		
सह़ाबा व सह़ाबियात का त़रीक़ा	15	**मदनी मुज़ाकरे** के बारे में अमीरे एह़ले सुन्नत के मदनी फूल	49
बिला वासित़ा सुवालात करना	15		
आ़लिमे दीन के पास ह़ाज़िर होने और सुवाल करने के आदाब	18	**मदनी मुज़ाकरे** के मुतअ़ल्लिक़ मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी फूल	52
बिल वासित़ा सुवालात करना	19	रोज़ाना **मदनी मुज़ाकरा** सुनने की मदनी बहार	54
नुमाइन्दा बन कर बारगाहे रिसालत में	20		
तसरीह़ व तौज़ीह़ के लिए सुवालात करना	22	**मदनी मुज़ाकरे** से मुतअ़ल्लिक़ एह़तियातों और मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवाल जवाब	55
कौन सा फ़िर्क़ा नजात पाएगा ?	23		
अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो ?	23		
दीगर अस्लाफ़े किराम का त़र्ज़े अ़मल	24	शरई एह़तियातें	55
पूरी रात मुज़ाकरे में गुज़ार दी	24	तन्ज़ीमी एह़तियातें	61
अस्लाफ़ के चन्द मज़ीद मुज़ाकरों का तज़किरा	26	मुफ़ीद मालूमात पर मब्नी सुवालात	64
		मआख़िज़ो मराजेअ़	66
इमामे आज़म का इ़ल्मी मुज़ाकरा	28	फ़ेहरिस्त	68
आला ह़ज़रत और इ़ल्मी मुज़ाकरा	29		

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना ''ग़ौरो फ़िक्र'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पेहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए ।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिए ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

MRP

DAWAT-E-ISLAMI

0133180

MAKTABATUL MADINA

Faizane Madina, Mirzapur, Ahmedabad-380001 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006
feedbackmmhind@gmail.com 011-23284560, 8178862570
www.dawateislamihind.net FOR HOME DELIVERY 9978626025 *T&C apply

www.dawateislami.net